थापित करत सोसम बिषमचित्तनदेत ७६ दो० । * फलीकरण † पिण्याकहू ‡ कण ‖ कुल्माष समेत। ¶ थालि पुरीषादिक अशन देत लेत अतिहेत ८० छन्द रामगीतिका । § एकवै इक वृषलपति कौ कामना सुतहेत । भद्रकाल्यै मानियो पशुपुरुष भक्तिसमेत ॥ पुरुष ढूंढ़न दूतधाये तासु आयसुपाइ । मध्यनिशि महँ ढूंढ़ि बहु केदार आये धाइ ८१ हरिलीला छंद। बीरासनेन द्विजसुख्यविलोकि पायो । बाराह रचण मृगादिक चित्तलायो ॥ दूता तहां सुपति कार्य बिलोकि भारी । बद्धातिन्हैं रसनयासुचले सुखारी ८२ चौ ०। विकसित बदन देवि गृहलाये । वृषलपतिहि पुनि खबरि जनाये॥ * पणय कियोतिनकर अभिषेका। भूषण पटपहिनाइ अनेका ८३ लेपास्रक तिलकादि सुहावन। अपर उपस्कृत बहुमन भावन ॥ † अशन कराइधूप अरुदीपा। माल्य लाजकिशलय सुखरूपा ८४ अंकुर फलोपहार उपेता। ‡ बैशस संस्थया सु युतहेता ॥ गीतस्तुति मृदङ्ग बहुबाजे। पणवघोष अतिशय सुखसाजे ८५ छन्दरामगीतिका । पुरुष पशुलैभद्रकालि समीप कीन्होठाढ़। पुरुष पशुबलिदानके हितकोससो असिकाढ़॥ असि करालहि मंत्रिकर मोलेतभो तहँजौन । भद्रकालिबिलोक धन मदप्रकृतिरजतमतौन ८६ भगवत्कलाकुलबीरको पुनितिरस्कारहि देखि। जीवहिंसक कृत्यदारुण कर्म उत्पथलेखि॥ स्वैरबिहरत वैरकाहुन ब्रह्मभूत अमान। ब्रह्मऋषिसुतसुहृद भूतननाहिं तेज प्रमान ८७ देखिसूना। उचितनाहीं आलभनअनुरागि। ब्रह्मतेज करालसों जनुजरनदेवीलागि ॥ ‖ उच्चचाट सुसैवदेवी भद्रकालि तहांन। ¶ रभसरोषावेश बिलसितभृकुटिलजहान ८८ § भृशामर्ष *

---

* फलीकरणतुषाः † पिण्याकं तैलयंत्रोद्धृतं तिलकिट्टम् ॥ ‡ कणाश्चूर्णतंडुलाः ॥ ‖ कल्माषाः कीटदष्टामाषाः ¶ थाली पुरीष थाली लग्नं दग्धान्नम् § एक वै एक समय * पणय पुरोहित † अशन भोजन ‡ बैसंस्थया हिंसा विधानेन ॥ ‖ उच्चचाट मतिमांत्यक्त्वाबर्हिर्निर्गता ¶ रभसेवग § भृशात्यंत * आमर्षक्रोध ॥

कराल दंष्ट्रा अरुण ईक्षणजासु। अति भयानक बदन इच्छाहननकी मनतासु ॥ महा अट्टाहास देवी कीन्ह क्रोधितहाल। ¶ उत्पत्य पुनिहतन दुष्टन छीन लियकरवाल ८९ काटि मस्तक खलनको पुनि रुधिरकीन्हो पान। गणनसहपुनि नृत्यकीन्हो अपरकीन्हो गान ॥ शीशकन्दुक खेलबिह्वलपान मद सो होइ। आपहीको फलतहै अभिचार ऐसोसोइ ९० दो०। नृपति सिंधु सौबीरको नामरहूगणजोइ। कपिलाश्रमकोजातहो तत्त्वजानिबे सोइ ९१ शिविकामाहँ सवारसो इक्षुम तीतट आव। कुलपति शिविका वाहकन पुरुषान्वेषणधाव ९२ उपसादित पुनि दैव करि द्विजवर परोलखाइ। पीवायुवाविलोकिकै गहिलायो ता ठाइ ९३ तिन उवाह शिविका तबहिं मनआनन्दबढ़ाइ। कूदि जातइषुमात्र लखि पृथ्वी सत्वलखाइ ९४ शिविका बिषम बिलोकि कै कहो रहूगणहेत। यान बिषमकिमिचलतहै हेकोढ़ांरस चेत ९५ सुनतरहूगणकेबचन वाहकबोलेबैन। अंबहीं आयोकर्मतिहियामें कोऊहैन ९६ शीघ्रनह्वैंयहचलतहैयासँगजाहिंनपार। सुनतरहूगणबचनये करिमनमाँहबिचार ९७ ॥ सोरठा ॥ सांसर्गिकजो दोष एककरैलागैसबन ॥ गुनिकियकिंचितरोष रजसावृतमति कहत भे ९८ ब्रह्मतेजनहिंजान भस्माच्छादितअनलइव। यदपि बृद्धमतमान तदपिभुलानोनृपत्तिहँ ९९ अहोकष्टकीबात बहुतथके तुमबहुतचलि। अतिजीरणतवगात ऊहिबानतुमहींसकल १००जरसा बिकलशरीर बिप्रलब्धयाभाँतिबहु। सुनेबचनधरिधीजानि अबिद्या बिहित जग १०१ मिथ्या सकल बिचारि तूष्णी यानो वाहपुनि। कूदे सत्त्व निहारि बिषम यान पुनि होत भो १०२ दो०। देखि बिषम शिविका बहुरि किया रहूगण क्रोध। किमिद मरेत्वं जीवतहि मरो तजोइमिबोध १०३ आज्ञाउल्लंघन करत नृपति मोकहँ जानि। तूप्रमत्तअतिहीअहै करौंचिकित्सा आनि १०४ दण्ड पाणि जिमि जन्तुन को शिक्षादेत

¶ उत्पत्य कहिये कूदकर ॥

सदाइ। इमि नृदेव अभिमान बश बचन कहे दुखदाइ १०५
तिरस्कार मय बचन बहु सुनि जड़ भरत सुजान। योग मांझ पर-
बीन अति कहे बचन सुखदान १०६ कहे बचन जे नृपतिबर
सत्य सकल हैं सोइ। भारपीव आदिक कथन ज्ञानिन मूरखन
होइ१०७स्थौल्य कार्श्य निद्रा रतिहु आधि व्याधि भय जोइ।
क्षुधा तृषा इच्छाजरा कालि शोकहु युत सोइ १०८ अहंकारअरु
क्रोधहू सुख दुख आदिक जौन। सकल देहके जानिये मोमेंहैं
नहिं तौन १०९ जीवनमृत जो नृप कहो सोऊ सत्य प्रमान।
आद्यंतवत देह यह क्षण प्रति बेद बखान ११० स्वामी आज्ञा
भंगकर जो यह कियो बखान। स्वामि भाव ध्रुवनहिं लखत
राज्यादिक मन आन १११ राज्यकरत तुमहम तजी गुनिमिथ्या
व्यवहार। ईश्वर जानत मोहवश करिबे बचन उचार ११२
करन चिकित्सा जोकहो सुनिय बचन ममसोइ। शिक्षास्त ब्ध
प्रमत्तकी पिष्ट पेष नहिं होइ ११३ जड़ोन्मत्तवत हम फिरत मुक्त
रूप सबकाल। होइ चिकित्सा कौन बिधि सुनिय बचन मम
हाल ११४ इमि उत्तर दैनृपतिको योगाभ्यास प्रवीन। कर्मभोग
मन जानिकै राज यान मधिलीन ११५ सुनत सिंधु सौबीरि
पति बचन योगमयजौन। राज गर्व तजि यान तजि पादमूल
गत तौन ११६ क्षमापयन करजोरि कै कहो बचन इमि सोइ।
कौन गूढ़ तुम फिरतहौ धरेसूत्र द्विजकोइ ११७ दत्तात्रेयादिक-
नमें अथवा तुम अवधूत। अथवा कपिल मुनीशहौ चले करन
ममपूत ११८ इद्र बज्र सों शंक नहिं त्र्यक्षशूल यम दण्ड। सो-
माग्न्यर्ककुबेर चल अस्त्र महापरचण्ड ११९ ब्राह्मण कुल अप-
मानते जैसो भय उरमाहिं। तासों मोसन बरणिये गुप्त राखिये
नाहिं १२० जड़वत फिरतअसंगहौ गूढ़बीर्य बिज्ञान। योगग्रथि-
त तव बचनहैं हमसम किमि पहिचान १२१ ज्ञान पूंछिबेकेहितै
जात रहों मैं यत्र। ज्ञान कला अवतार तुम कहा कपिलहौ
अत्र १२२ लोक निरीक्षण अर्थसो बिचरततज अपार। गृहा-

सक्त बुद्ध्यंहम किमिपावैं तत्वपार १२३ आपुकहो मम भारनहिं
देह कर्म है तत्र। परो भारयह आपको हम जानतहैं अत्र १२४
यथा अग्नि के ताप सों थाली तापित होइ। तासों पय-
पय सों बहुरि तण्डुल जानिय सोइ १२५ देहेन्द्रिय असु
आश यह निदाघादि को पाइ। क्रमसों तापित होत हैं या
बिधि मोहिं लखाइ १२६ मैं नृदेव यह गर्ब निज धारिहिये
बिच जोइ। तिरस्कार किय आपको करिय क्षमापन सोइ१२७
यद्यपिरहित बिकारप्रभु रंचक्रोध उरनाहिं। महदपिमानति
आपुहीं मादक क्षणहिं नशाहिं १२८ सुनत बिप्रबर कहतभे
अबि दुख यदपि नरेश। बात कहत बिदुषन सरिस हैन सत्य
कर लेश १२९ यासों व्यवहारहि कहत लौकिक सत्यबखानि।
सूरिनतत्त्वबिचार में कहत सत्य यहजानि १३० बैदिक कर्महु
सत्यनहिं हैव्यवहार समेत। गार्ईमेध बिस्तारजहँ तत्त्व बादन-
हिंहेत १३१ त्रैगुण सों * अनुरुद्ध मन पूरुषको जबताइ। धर्मा-
धर्म बढ़ावई † चेता कृतिन पाइ १३२ नामरूप बहुबिधि लहै
सोइ वासना धारि। तिर्यगऊंचहुनीचहू योनिलहै दुखकारि
१३३ सुख दुख बहु बिधि भोगई काल प्राप्तफल सोइ। संसृति
चक्र सुकूटमें भ्रमत सदादुखहोइ १३४गुणानुरक्तंहिब्यसनहै नि-
र्गुण में सुखहोइ। घृतपाये दीपकबरै ताबिन ज्योतिनसोइ १३५
चौ०। गुणकर्मानुबद्धपदजोई। गेहमन वृत्तितत्त्व तजिसोई॥
एकादश मन वृत्तीजानो। धियाकृति अभिमान बखानो १३६
‡ कर्मेन्द्री आकृती पांचा। ज्ञानेन्द्री धिय जानिय सांचा॥ एका-
दश अभिमान मिलाई। तिन भूमी एकादश गाई १३७ गंध
रूप रस स्पर्श शब्द पुनि। बिषय ज्ञान इन्द्रियन पांचगुनि॥
कर्मेन्द्रियन पांचपुनि जानिय। रति बिसर्ग गति भाषण मा-
निय १३८ शिल्प समेत पाँचहैं जोई। सहाभिमानैकादश
सोई॥ इनएकादश को स्वीकरणा। अहंकार शय्यावत वरणा।

* अनुरुध वशीकृत † चेतज्ञानेंद्री ‡ आकृतिकर्मेंद्री॥

१३९ मम इतिभोग भुवन गह जोई । द्वादश बृत्ति कहावत सोई ॥ सोवत जीवतहाँ सुखपाई । अहँकार युत पुरुष कहाई १४० मन बिकार पुनि बिबिध प्रकारा । शतसहस्र कोटिनैअ-पारा ॥ नाहिं मिथा अपनहुं सोनाहीं । ईश्वर कृपा प्रवृद्धरहा-हीं १४१ क्षेत्रज्ञात्मा पुरुष पुराणा । स्वयंज्योति अज बेद प्रमाणा ॥ नारायण परेश भगवाना । बासुदेव जिहि बेद ब-खाना १४२ स्थाप्यमान मायाकरि सोई । जीव बिषे परकाशित जोई ॥ सोमाया स्वाधीन सदाई । व्यासभयो इच्छासोआई १४३ यथाअनिल ब्यापित जगएहा । चेष्टाकरत अङ्गअंगदेहा ॥ बासु-देव एवं पहिचानो । ब्यापित सकल जगत सुख सानो १४४ जब लगि ज्ञानोदय नहिं होवै । मायां जीतिन सुख सों सोवै । मुक्त सङ्ग षट शत्रुन मारै । आत्म तत्त्व नहिं जानि बिचारै१४५ तबलगि भ्रमतरहै जगमाहीं । पुनि जबलगि जीतै मननाहीं । बिषयारत अनरथ करहेतू । मन संसार तापकर खेतू १४६ आत्मो-पाधि भूत मन एहू । शोक मोह आमयकर गेहू । राग लोभबैरा-दिक जोई । ममता धारकहै मन सोई १४७ यह अति शत्रु घोरहै राजा । ताहि मारि सारिय निज काजा ॥ बढ़ो शत्रु मिथ्या पुनि जोई । आत्मा काहँ चुरावत सोई १४८ गुरु हरि चरण उपासन जोई । लीजिय धारि अस्त्र दृढ़ सोई । तब तुम्हार होवै कल्याना । या बिधि नृपसों बिप्रबखाना १४९ सुनत रहूगण युग कर जोरी । लागे अस्तुति करन बहोरी ॥ नमोनमः * कारण तन स्वामी । हे † अवधूत नमामि नमामी १५० दो० । परमानन्द प्रकाश करि जानत तुच्छशरीर । समदरशी सबकाल में रहत एक रसधीर १५१ चौ० । ‡ ज्वरामयार्त्त ॥ अगद जिमि पावै । दग्धनिदाघ ¶ हिमांभ सुहावै । तिमि § कुदेह मानाहि

---

* कारण मीश्वरः तस्यैव लोक संरक्षणार्थ तनुः † अवधूतयोगेश्वर ‡ ज्वरामयार्त ज्वर रोगसों पीड़ित ॥ अगद औषध ¶ हिमाम्भ शीतल जल बागंगोदक § कुदेह कुत्सिते देहेमानः अहंकारसएवाहिः तेन विशेषेशाद दष्टादंशितात वेदं वचःमृत तुल्यमौषधं ॥

विदष्टा। वचनामृत औषध हरकष्टा १५२ है मेरे उरसंशय जोई। प्रथमहिं दूरिकरिय प्रभुसोई ॥ योगाध्यात्म ग्रथित तवबानी। अति दुर्बोध जातनहिं जानी १५३ होइ सुबोध कहियमोपाहीं। कौतूहल मेरे उरमाहीं ॥ हे योगेश्वर कहाजुसोई। दृश्यमान कर्मन फल जोई १५४ है व्यवहार मूल वहसोई। तत्त्व विचार हेत नहिंहोई ॥ तासों अमित भ्रमत मनमोरा। भाषि सुवचन दीजिये छोरा १५५ बोले बिप्र च्छिप्र यह सुनिकै। पार्थिव बचन सुनिय मनगुनिकै ॥ भूबिकार भूचरहैं सिद्धा। भारवाह किमि नाम प्रसिद्धा १५६ भूपर पाद गुल्फ हैं आगे। जंघा जानूरुक-टिलागे ॥ उरशिर अरुधरांसहैं तहँवाँ। शिविका दार्वीराजत जहँवाँ १५७ जामें आप युक्त अभिमाना। हमसौवीर राजयह जाना ॥ दुर्मदांध अतिही तुमराई। सिन्धु देशके नृपति कहाई १५८ दयाहीन अतिही तुम राजा। जनगोसा हम कहत न लाजा ॥ वृद्धसभानहिं सोहियताता। औरौ सुनहु कहिय कछु बाता १५९ दो०। भूमीहीमें जन्म अरु नाश चराचरहोइ। नाम मात्रहै अलग सब सकल भूमिहैसोइ १६० सत्य मृत्तिकाही अहै बाचारंभण और। यथा पुरटकंकण कँड़ाअहै स्वर्ण सबठौर १६१ वाह्याभ्यंतर शून्य जो ज्ञान सत्यहै सोइ। भगवच्छब्दप्रशांत पुनि बासुदेवहै जोइ १६२ चौ०। तपसोंमिलै ज्ञाननहिं एहा। यज्ञकिये नहिं त्यागेगेहा ॥ वेदपढ़ मानसनहिंआवै। रबिजलाग्निसेये नहिं पावै १६३ महत्पादरज शीशचढ़ावै। नाना-बिधि सेव ामनलावै ॥ सुनहु रहूगण तुमहिं बतावत। तिनकी कृपा ज्ञान उरआवत १६४ भगवत कथा जहाँ सुखदाई। ग्राम्य कथाकर नामनभाई ॥ सेवत ताहि मुमुक्षुसदाई। वासुदेव मति देतलगाई १६५ दो०। भरत नाम राजारहे पूर्वकाल हमजोइ। भगवत आराधनहिते राज्य तजी वहसोइ १६६ तहाँ मृगाके संगसो लही मृगा की देह। रह्यो ज्ञान मृगदेहहू भगवत चरण सनेह १६७ शंकमान मैं सङ्गसों तबहींते महिपाल। सबसों रह-

त असङ्गहौं +पुनि अविवृत सबकाल १६८ तातेधारि सुसङ्गको तजि कुसङ्ग दुखकार। जात ज्ञान असिमोह दलि जाइ जगतके पार १६९ चौ०। बहुरि बिप्रबोल्यो सुखपाई। सुनिये भूप अपर मनलाई॥ दुस्तर मार्ग प्रवृत्ति बिशेखै। त्रिगुणविभक्तकर्म तहँदेखै १७० यथा बणिक अर्थार्जनकोई। भवाटवी घूमन सुख होई॥ तिमि यहजीव भ्रमतसुख हेत। सुखकरलेशनदुख सहिलेता १७१ रहैं तहाँ +षट्चोरसदाई। हरहिंकुनायक धनबलपाई॥ +गोमायवसार्थिक जहँहरई। उरणहि वृका प्रविशि जिमिदरई १७२ *गह्वर बिपिन गुल्म तृणनाना। मशक दंशबहु लता बिताना॥ बणिक तहाँ ब्याकुल अति होई। पुरगंधर्ब प्रविशकहुँसोई १७३ उल्मुक ग्रहअति बेगकहाई। कर प्रवेश कबहूं तहँ धाई॥ धन जलबास आदिहित सोई। धावत भवाटवीमें जोई १७४ कबहुं पांसुवात्योत्थितं पाई। धूम्रादिशान परत लखाई॥ रजस्वलाक्षहोइ तहँ भारी। कहुँ अदृश्य झिल्ली दुखकारी १७५ कर्ण शब्द सुनि होइ अधीरा। कबहुँ उलूक शब्द सुनि पीरा॥ क्षुधित अपुण्य वृक्ष कहँ सेवै कबहुँ मरीचि तोय चित देवै १७६ कबहुँ बितोय सरित जलपेखै। कबहुँ निरंध परस्पर देखै॥ क-

---

† अविवृतअप्रकट +षट्चोर इन्द्री कुनायकबुद्धि धन सुख उरणमेष ×गोमायवःसृगालतन्याहारापत्य दयः सार्थिक सार्थेस्थितहरंति *गह्वर बिपिन गृहाश्रमगुल्मतृण कामकर्मादि मशक दंशनसोअर्थ दुर्जननसो बणिकगृही ब्याकुल होइ गंधर्बपुर मिथ्यादेहादि को सत्यमानत है उल्मुक ग्रहपिशाच तत्तुल्यसुवर्णादि उपार्जनार्थ श्रम करत है तासमेत नाशको प्राप्तहोय है १७४ वात्योत्थित वातोपम प्रथमदांक आरोपित पांसुरजरागीतीहकीर निशाविषे रजोगुणकरि आछन्नमति है जाकी रजोब्याप्तचक्षुरिव दिक्षु स्थित देवतनको नहींजानतहै और कबहूं अदृश्य जोझिल्ली झींगुर अर्थात् परोक्ष अप्रियकहनेवाले पुरुष झिल्लीतुल्यहै १७५ प्रत्यक्ष अप्रियवक्ताउलूक तुल्यहैं अपुण्य वृक्षतुल्याधार्मिकान् सेवै मरीचितोय मृगतृष्णा मिथ्या बिषय जो हैं तिन में कबहुं चितदेत है १७६ बितोय सरित निर्जल नदीवत्पाखंड धर्म ताको पेखै सेवत है निरंध अन्नहीन अन्नादि दायादिकन सों चाहत है दावा तुल्य दुःखद ग्रहनामें जो शोकाग्नि है तामें जातनाम जरत है यक्षतुल्य राजा

बहुँ जरै दावामाधि जाई। कबहुं यच्छअसुहरैं बनाई १७७ शूर बित्तकतहूँ हरिलेई। कश्मल पावशोच अतिहोई ॥ कहुँ गधर्व नगर महँजाई। लहै प्रमोद मुहूरत भाई १७८ कंटक शर्कर। त्रे दुखपावै। पर्वत चढ़न चलत कहुँधावै ॥ पदे पदेऽभ्यंतर शिखिकरिकै। पीड़ित कौटुम्बिक रुट धरिकै १७९ अजगरली लि कबहुँ तिहिलेवै। सोनाहीं जानतयाभवै ॥ दंदशूक कबहू दशि डारै। सोवत बनबेधित दुखभारै १८० पतित अंधकूपांधहु सोई। जागत नहिं तमिश्रमाधि जोई ॥ ढूंढ़त चौडू बिपिनकहुँ सोई। तामक्खिन विमान दुखिहोई १८१ तहँ अति कष्ट लहै जो माना। तासों हरै और सो आना ॥ शीतातप बर्षा अरु बाता। नहिं उपाय जानै सहगाता १८२ करत परस्पर कहुँ ब्यवहारा। बित्तशाठ्य बिद्वेष प्रचारा ॥ होइ क्षीण धन कबहू सोई। हीनासन शय्या गृहहोई १८३ याचमान परसो नहिं पावै। दृशि पार क्यतिरस्कृत जावै ॥ बणिक सोइ भवकानन माहीं। नाना भांति लहत दुखकाहीं १८४ छन्दषट्पद।

असु जोप्राण हैं तिलवत्प्रियधन १७७ क्रूर सुभुट कश्मल दुःख गंधर्व नगरवत् मनोरथोपगत पितृ पुत्रादि समाज प्रमोदानंद १७८ अर्थ कंटक शर्करांघ्रीति। जैसे कंटकादि सों वेधित अंघ्रि चरण हावैं तादृशजो हैं बिघ्न तिनकरि दुखित हाकर पर्वत तुल्यजो हैं महत्कर्म तिनपर चढ़नकाहिये करिबे की इच्छा करै है पदे पदे कहिये क्षण क्षण के विषे अभ्यंतर शिखि जो है जठराग्नि ताकरि पीड़ित जोहै कौटुम्बिक कुटुम्बी पुरुष सोरुट धरिकै कहिये क्रोध को धारण करि जनन सों द्वेष करै है यह ऊपर सोजानिये १७९ अजगरवत् निद्राने लीलिलीन्हों है परंतु सो बणिकया भेव कहिये भेदको नहीं जानै है दंदशूकजो है सर्पतादृशदुर्जन पुरुष अंधोल्लुप्त बिबेकःअंधकूप मोह १८० पतितःतमिश्र जाहैदुःखतासों नहीं जागत अर्थात् दुःखही में लीन है क्षौद्रवत् परस्त्री इत्यादि तामक्खीवत योषादि स्वामिन् करि विमानकहिये तिरस्कृत अर्थात् ताड़ित दुखीहोयहै १८१ तहां अतिकष्टकरि मानाकहिये योषादिकशास हू होयहै तासों और पुनः और सों औरही लेतहै शीतातपादि नानाप्रकार के बिघ्न अधिदैविक अधिभूतिक अधिमान सिक १८२ बित्तशाठ्य कहिये धन घंघनला १८३ दृशिपारक्य कहिये पराई वस्तुकीवेष्ट अभिलाष है जिसका सो तिरस्कृत कहिये असमान को प्राप्तहोवै है १८४ अर्थ अध्वमार्ग दुरत्य-

बित्तपरस्पर देत कबहुँ पुनिलेत बैरकरि। करत परस्पर ब्याहकबहुं अतिचाह मोदभरि॥ अध्व दुरत्यय बित्त बाध तहँकष्ट महानै। द्वेषादिकन समेत बिहर होवै गत प्रानै॥ कहि जियालाल गत असुन तजि गहै जातही जातनव। नहिं लहत अध्वपरयोग जो बरणिकहो यहतात तव १८५ छन्द बरवा। दिगाजेन्द्र जिन जीते सूर सुदेह। वृद्धबैर यह भाषत भुवि ममएह॥ मृधशायीत नहिं जावैं तदपि तहांसु। न्यस्तदण्ड जहँजावैं गतवैरासु १८६ लताभुजाश्रय गाहिकै कहुँथिर होइ। पदाव्यक्त तिहिआश्रय चहखग सोइ॥ लहै त्रास हरिचक्रकि कबहूँ तौन। सख्य करत बककंकन गृद्धन जौन १८७ चौ०। तैवंचित सुंहस कुल जावै। नहिंरोचत बानर कुलधावै॥ तासु जाति के रासबिशेखी। बिस्मृत अवधि परस्पर देखी १८८ प्रिय सुत दार द्रुमन रमसोई। बिवश स्वबंध दीन रति जोई॥ पत प्रमाद कन्दर गिरिजाई। रह बल्ली गहि गजभय

यदुस्तर सुख दुःखराग द्वेष भयाभिमान प्रमादोन्माद शोकमोहलोभ मात्सर्येर्ष्याऽवमान क्षुत्पिपासाधि व्याधिजन्मजरा मरणादयः जातही जातनवीन नवीन देहों को ग्रहण करै है तात हे रहूगण १८५ वृद्धकहिये बढ़ाजो है बैर मृधसंग्राम न्यस्तदण्ड संन्यासी जहँ कहिये जहां विष्णु पदको जात हैं १८६ पुनर्भवाटवामेवानुवर्त्तयति लता भुजा जो हैं शाखा तिनवत् जो हैं सुकुमार स्त्रीणां भुजास्तदा श्रयाद पदाव्यक्त कहिये अस्फुटाक्षराःकल भाषिणोये द्विजाःपक्षिणस्तत्तुल्येषु स्त्री संग प्रसक्तेषु स्पृहायस्य हरिचक्र सिंहसमूहस्तत्तुल्यकालचक्र ताकीत्रास जन्ममरणादि तत्परिहाराय कैश्चित्प्रलोभितो बकादिवद्वंचकैः क्षुद्रैः क्रूरैश्चपाखंडैःसहसख्यं करोति अर्थात् पाखंड धर्म को धारणकरैहै १८७ तैवंचित तत्र फलाभावं ज्ञात्वांहसानां ब्राह्मणानां कुलंपुनःप्रविशन् तेषांशीलं प्रायश्चित्त पूर्वकं पुनरुपनयनाद्याचार नाहिंरोचत अप्रिय जानकर बानर कुलधावै बानर तुल्यजो हैं भ्रष्टाचार शूद्र तामधि प्रवेश करै है तासु जाति के रास बानरवत् क्रीड़ा मैथुन और परस्पर मुख देखना इत्यादि करि बिस्मृत है जीवित अवधि जाको १८८ द्रुमवत्गृह रति दीन कहिये मैथुन में कृपण होकर निज बंधन को विवश कहिये छुटाइबे में असमर्थ है गिरि कन्दरवत् भयानक जो रोगादिहैं तिनमें जो पतमान अर्थात् रोगादिकन सों ग्रसित गज तुल्य जो है मृत्यु तासों भयभीत बल्ली तुल्य जो

पाई १८६ छूटैं आपदसो बिधि कोई । बहुरि प्रवेश करैं तहँ सोई ॥ दुस्तर अध्वनिवेशित माया । भ्रमत अजहुँ जन जानि न पाया १६० ॥

तुमहु रहूगण मारग एहा । न्यस्त दण्ड कृत भूत सनेहा ॥ आत्म असज्जित श्री हरि सेवा । असित ज्ञान असिलै तर एवा १६१ याबिधि बचन रहूगण सुनिकै । बोलत भे उर आनँद गुनिकै ॥ अहो नृजन्म अखिल जनु नीको । अपर जन्म देवादिक फीको १६२ जहाँ न हृषीकेश यश गाना । नाहिं समागम आपुसमाना ॥ त्वच्चरणाब्ज रेणु गतपापा । करि हरि भक्ति पूर्ण उर ब्यापा १६३ एक मुहूर्त्त समागम भयऊ । मम अबिबेक सकल नाशि गयऊ॥ उन्मूलन समस्त दुस्तर्का॥ मोह तिमिर नाशक बच अर्का १६४ शिशु बटु रूप युवा बपु जोई । बार बार बिनवों पद सोई ॥ बिचरत ब्राह्मण भू अवधूता । तिन सों नृपन भव्य उर पूता १६५ दीन रहूगण को इमि ज्ञाना । तिहि पद बन्दित कीन्ह पयाना ॥ आपूर्णार्णव इव सुखदाना ॥ निभृतकर्णउर्म्याशय नाना १६६ बिचरन बहुरि धरणिसो लागे । ब्रह्मामृत आनँद रस पागे ॥ आत्म तत्त्व लहि नृप सौबीरा । देहम मत्व दीन्ह तजि धीरा १६७ ॥

यह+ भागवत सभा जित चरिता । गुण अवदात कर्म मुद सरिता ॥ धनि स्वस्त्ययना युष्य सुहावा । श्री राजर्षि भरत कर गावा १६८ स्वर्ग्य यशस्या पवर्ग्य सोई । आख्यास्यति शृणोति नर जोई ॥ अभिनन्दति पूर्णाशिष पावै । स्वत एवाशाकाहु न लावै १६६ ॥

ह्वै प्राचीन कर्म तिनको गहिनाम ग्रहण करि रहनाम स्थितहोत है १८६ कोई बिधि किसीप्रकार आपदासों छूटिहूजाइ तथापि बहुरिकहिये फिरि मायावश होकर ताहीं में प्रवेश करै है १९० अर्थ आत्म असाजित बिषय सों चित्तको न्यारो करि असित तीक्ष्ण एव अमुनाप्रकारेण १६१ जनुजन्मनके बिषे १९२ + भागवत जो हैं भगवद्भक्त तिनकरि सभाजित कहिये पूजित हैं जो भरत अवदात कहिये शुद्ध गुण और कर्म जिनके ॥

दो०। कथा अलर्क सुबाहुकी मन्दा लसा समेत। बरणौं सं-
कट दारिणी अघ हारिणि मुद मेत २०० नाम शत्रुजित प्रथम
भे भूप महा बलवान। सोम पान तोषित भयो जासु यज्ञ मघ-
वान २०१ तस्यात्मजपुनिह्वैतभो शत्रुविडारणनाम। बुधि
विक्रमगुरुशक्रसमबीरजशोभाधाम २०२ बुद्धिमान बयजासुसम
औरनृपनकेबाल। रहतासंग सुनित्यही आनन्दितसबकाल२०३
चौ०। कबहूँशास्त्र बिबेक बिचारैं। नृत्यगीतकहुँ काव्यप्रचारैं॥
कबहुँअक्षशस्त्रास्त्रप्रकाशा। स्यन्दनाश्वरण गजअभ्यासा २०४
क्रीड़ादेखि शुभग सबकाला।आवहिं बैश्यबिप्र नृपबाला॥ नाग
अश्वतर के द्वै बाला। क्रीड़ा लखि आये इक काला २०५ ब्रा
ह्मण रूप युवा धरि भेषा। क्रीड़ा बहु प्रकार तिन देखा॥ पुनि
सब बाल न सह अस्माना। करि किय मधुर अशन अहाना२०६
बस्त्राभरण गंध तनधारी। ल ।ालकन आनँदभारी॥ यहिबिधि
नित बालक तहँ आवैं। नाग कुमारहु अति सुख पावैं २०७ नृप
सुत नाग सुवन अति नेहा। तिन बिन सुखी रहतनहिं एहा॥
करतनतिनबिहीन अस्माना। गंधबस्त्र भोजन मधुपाना २०८
नाग पुत्र ताबिन दुख पावैं। निशा रसातल दुखितगवावैं एक
दिवस कह मातु पिताहू। नित सुतमृत्युलोक तुम जाहू २०९
कासो परमप्रीतिअतिभारी। पुत्रबचन ममकहौ बिचारी॥ सुनि
पितु मातुबचन करजोरी। नागसुवन कहबचन बहोरी २१० दो०।
पुत्र शत्रुजित नृपतिको नाम ऋतुध्वज सोइ। रूपवान आर्जव
गुणी शूरप्रियंबदहोइ २११ अनापृष्ट सब कहतसो मैत्र महावि-
द्वान। मानी मानहिदेतहै ह्रीयमान धीमान २१२ तासुप्रीति
संभोगसो हरोहमारो चित्त। नागलोक मम सुखनहीं रहमन ता
ढिगनित्त २१३ नहिं शीतल पातालहै तद्वियोग सुनुतात। य-
दिरह्यहता पितकरत तासँगलह सुखगात २१४ पुण्यवान धनि
पुत्रसो यश एवंबिध जासु। कहत परोक्षहु गुणनको तुमसमान
गुणितासु २१५ होतशास्त्रविद शीलबिन मूर्खशीलयुतहोइ।

शास्त्र शील दोनोंजहाँ पुत्रधन्यहै सोइ २१६ कहैं मित्रगुण जा-
सुके शत्रु पराक्रम यस्य। धन्यपितासो जानिये धन्य पुत्रसो त-
स्य २१७ तासुकरण उपकारको चहत पुत्रहौकौन। मनवांछित
मोसनकहौ होइचित्तमें जौन २१८ जीवितताको धन्यहै धन्य
जन्महै तासु। मित्रअर्थ दुर्बल नहीं नहिं अदेय कछुजासु २१९
मेरेगृह सुवरण रतन बाहन आसनजौन। मित्रतुम्हारो जो चहै
बांछित दीजिय तौन २२० धिकजीवन तिहिपुरुषको मित्रनको
उपकार। करैनहीं जीवनचहै याअसत्य संसार २२१ सुनत पि-
ताके बचन इमिबोले पुत्रसनेह। सर्बसु पूरण मित्रमम नहीं देय
ममगेह २२२ सबकामन पूजित सदा सर्बार्थी जागेह। जौनरत्न
तागेहमें नहिंपाताल न एह २२३ बाहन याना सनबसन भूषण
बुधिविज्ञान। तत्र जौनहम देखियत लखतनहीं थलआन २२४
तासु एक कर्त्तव्यहै हैअसाध्य पितुतौन। बिनईश्वर गोबिन्दके
और करैगो कौन २२५ सुनिपुत्रनके बचनइमि कहोपिता पुनि
बैन। सुनिबेकी इच्छाअहै करन योगयदिहैन २२६ साध्य असा-
ध्यहु होतजो विपश्चितनको नाहिं। सुरपद सुरपति पदपरे
बांछित मानव जाहिं २२७ ताविज्ञातागम्यहू अप्रापित कछु
नाहिं। उद्यत मनुज जितेन्द्रियन दिविइह लोकहु माहिं २२८
चलत सहस्रनयोजनहु लघु पिपीलिका जात। बिनाचले ख-
गपति सरिसपाद एकनाहिं तात २२९ कहँ ध्रुवपद कहँ भूमियह
प्रासभय ध्रुवजाइ। ताते सुत बर्णनकरिय कारज सुतनर राइ
२३० चौ०॥ पिता बचन सुनिकै द्वौभाई। बर्णन लाग कथा
नरराई॥ पूरबवृत्तसनिय पितुसोई। कौमारके मित्रकरजोई २३१
गालव एकबुद्धिके धामा। लिये अश्व आयेनृपठामा॥ बोलत
भये नृपतसा बैना। दैत्याधमको ऊममऐना २३२ करत उपद्रव
पापघनेरा। धारत रूपसिंहइभ केरा॥ ध्यान समाधि मौनजब
धारत। करिकैंबिघ्न चालि मनटारत २३३ छन्दरामगीतिका॥
एक दाहमहोइ ब्याकुल तजतभे बिश्वास। भयोदेखत असुर

मोहित गिरो अश्वअकाश ॥ भई अम्बर बाणिहू पुनि सुनिय
सोमहिपाल । रहैगो अश्रान्त यह हय सकल भूमे चाल २३४
तोय अम्बरहू पतालहु विहतगति है यस्य । जाइगो सब
दिशन कानन भयन गिरिहूतस्य ॥ जाहिसो अश्रान्तभूमे चरै
गोहय एह ॥ नामकुवलय लोकमें परसिद्ध होवैतेह २३५ दान-
वाधमदेत पापी दुक्ख तुमको जौन । शत्रुजित भूपाल सुतकर
लहैगो बधतौन ॥ समारुह्य सुअश्वया परऋत ध्वजवरबीर
स्वहय लहिजाइ ख्यातिहि हरैगोऋषि पीर २३६ दो० । भाग
भागिनृप होत हैं तव समीप महिपाल । ताते हम आये करिय
असुर तपघ्नक काल २३७ पुत्रहि आज्ञा दीजिये लीजियहय
यहसोइ । कीजियनृपति विचारिमन धर्मलोपनहिं होइ २३८
सुनि भूपति गालव बचन पुत्रहि अश्वचढ़ाइ । कीन्हो मंगलबि
बिध बिधि आनँदहिये बढ़ाइ २३९ गालवसंग पठवत भये भूप-
ति धर्म्म शरीर । निज आश्रम लावत भये भूपसुतहि मुनिधीर
२४० कहो अश्वतर नागपुनि सुनि पुत्रनके बैन । काहऋत ध्व-
ज करतभे जाइ ऋषयबर ऐन २४१ कहो पुत्रपितु बचन सुनि
गालव आश्रम जाइ । रहेअसुर जानत नहीं आयो अवसर पाइ
२४२ सन्ध्योपासन करत मुनि धरि शूकरकोरूप । बिघ्नहेतु आ-
यो निरखि चढ़ि हयनन्दन भूप २४३ तापीछे धावत भये लिये
शरासन हाथ । चन्द्र अर्द्ध आकारइषु मारो सुत नरनाथ २४४
बाण लगे भागत भयो गिरिवन महीअपार । कुवलयाश्वहूजात
भे धनुष बाण करधार २४५ चौ० । भागि बाराह जहाँ वहजावै ।
पीछे नृपति सुवन लखिपावै ॥ सहसन योजन महीपलाना ।
निज मनसो उबार नहिंजाना २४६ भाजि धरणि सो गर्त्तसमा-
ना । गयरे ऋतध्वजहू बलवाना ॥ अंधकार तहँ कछु न लखाई ।
दैत्यहु तहाँ न परो दिखाई २४७ आगे दीख पतालहि जाई ।
तहाँ प्रकाश परोदिखराई ॥ शतसंकुल प्रासाद बिलोका । सुबरण
रचित मनहुँ हरिओका २४८ प्रविशि लखोनर कोउन तहँवाँ ।

भ्रमत लखी प्रमदा इक जहँवाँ ॥ पूँछतभें तासों सुखपाई। तूसु-
श्रूकाबिधि इतआई २४९ सो तिनसों उत्तरनहिं दीन्हो। जाइ
प्रवेश भुवन मधि कीन्हो ॥ इनहूँ बाँधि तुरङ्गहि दीन्हा। जाइ
प्रवेश सुमन्दिर कीन्हा २५० तहाँ जाइ कन्या इक देखी। सुंदर
रतिसों रूप बिशेखी ॥ स्वर्णरचित पर्य्यंक बिराजत । मुखकी
प्रभा देखि बिधु लाजत २५१ भौंहन लखि धनुगुणकियन्यारी।
नयन बिलोकि मीनगे वारी॥ काननजाइ कुरंगलुकाने। खंजरीट
भूरुहन भुलाने २५२ कचश्यामता अमानिशि लाजी। शि-
खादेखि नागिनि बिलभाजी॥ नासा देखि कीर रटिलयऊ। दे-
खि गला दरउर फटिगयऊ २५३ ओष्ठबिम्बकी शोभाहारन।
रदबिलोकि उरफटो अनारन॥ श्रीफल सेव क्षोजसुहाये। पा-
णि कमलपल्लव छबिछाये २५४ चलदलपत्र उदरकी शो-
भा। कटि मृगराज देखि बनलोभा ॥ नाभि गँभीर भ्रमर जनु
सोहै। जंघा लखि रंभा छबिकोहै २५५ सुश्रोणीशोभित या
भाँती। पाद नखनमणि प्रभालखाती॥ पुष्पगुलाब पादतलमो-
हत। एंड़ीनारंगी छबि मोहत २५६ कोमलाङ्ग शोभित सु-
कुमारी। देखिऋतध्वज भये सुखारी॥ देखि ऋतध्वजको वहक-
न्या। तनमन भूलिभई बशधन्या २५७ उठतभई तत्क्षण तहँ
सोई। प्रापक्षोभ लज्जा अतिहोई॥ चिंताकरन चित्त निजला-
गी। देवयक्ष को यह बड़भागी २५८ है गंधर्व उरग वा कोई।
विद्याधर अथवा नर होई॥ इमि बिचिन्त्य लै ऊरधश्वासा। बैठीभू
मूर्च्छयाप्रकासा २५९ प्रापितभयो कामशरघाता। भयेऋतध्व-
ज कंपित गाता॥ ताहि बहुरि समभावन लयऊ। कछु भय
नहिं काहे भय कयऊ २६० प्रमदातौन तहां चलिआई। प्रथम-
हि लखी सूनुनरराई॥ तालवृंतलै बीजनलागी। मोहित देखि
प्रेमसोपागी २६१ तासों कहन ऋतध्वज लयऊ। याहिमोहका-
रण किहि भयऊ॥ सुनि किञ्चिल्लज्जान्वितबाला। कहतसु-
भई सखी निज हाला २६२ विश्वावसुगन्धर्बनभूपा। मदालसा

कन्या सुख रूपा ॥ गईं एकदिन सो फुलवाई । शोभादेखत फि-
रतमहाई २६३ बज्रकेतु दानवसुतजोई । गोपा तालकेतु तहँ
सोई ॥ करिमाया इतकोहरिलायो । हौंहू तहां जानि नहिंपायो
२६४ करै बिवाह त्रयोदश दीना । तालायक नहिं नारिनवी-
ना ॥ वेदश्रुती शूद्र जिमि कोई । चाहत दैत्यरमणि यह सोई
२६५ प्रथमहि देह तजन यह लागी । समुझायो सुरभी बड़भा-
गी ॥ पावै तुमहिं दैत्य यह नाहीं । जो मारिहि शरयातनमाहीं
२६६ मर्त्यलोकसोऐहैसोई । भर्त्ताअल्पकालमेंहोई ॥ मैं कुण्डला
सखी हौं याकी । पत्नी पुष्कर मालिन ताकी २६७ जबते मम
पति शुंभबिदारा । तीर्थनफिरौं किये आचारा ॥ चरौं दिव्य गति
हित परलोका । यासखिहेत रहौं इहिओका २६८ यह पाताल-
केतु अघधामा । बाणबिद्ध आयो याठामा ॥ तापीछे आपहुइत
आये । करधनुबाण अश्वसहधाये २६९ दो० । मुनीनां रक्षाकर-
ण कोऊबाणप्रहार । यहजो मूर्च्छागतभई सुनियेतौनबिचार २७०
चौ० । तुमहिं देखि अतिही सुखपायो । देवपुत्र समरूप सुहा-
यो ॥ वाक्यादिक गुण शील सुभाऊ । देखतभई सकल सति-
भाऊ २७१ मारोबाण असुरके जोई । भार्य्या अबताकी यहहो-
ई ॥ आयोमोहताहिके कारण । जीवतभरि नहिं सकिहिउबारण
२७२ तुमसों लगो अधिक नवनेहा । भर्त्ता अन्यहोइ दुखएहा ॥
जीवतभरिरहिहै दुखसोई । सुरभीबचन नान्यथा होई २७३ मोसों
यासों प्रीति भहाई । तनद्वै एकै चित्तलखाई ॥ सखी बीर पावै
पति मनको । तपहित जाब तबहिं हमबनको २७४ तुम कोहौ
किमर्थ इतआये । देव दैत्य गंधर्व सुहाये ॥ पन्नगकिन्नर कोवा
कहिये । इत न आव नर बपु नहिं लहिये २७५ करिये मोसन
सकल प्रकाशा । जो सुनि होइ सकलभ्रमनाशा ॥ कुवलयाश्व
सुनिकै तियबानी । कहतभये निजकथा बखानी २७६ नृपति
शत्रुजित पुत्र कहाये । पिता कहे मुनि रक्षण आये ॥ अब
कोऊ शूकर बपु तहँवां । रक्षा करत रहे हम जहँवां २७७

दो० । चन्द्र अर्द्ध आकार शर मारो तेज अपार । ता लागे भागत भयो ग ये पृष्ठ हय डार २७८ कूदि परो सो गर्त्त में हौं हूँ अश्वसमेत । भ्रमन लगे अति तिमिरमें लह प्रकाश पुनि एत २७९ इहाँ आइ तुमको लखो पूँछे कहे न बैन । आइ छपानी भवन में हमहुँ आव या ऐन २८० जो मोसन पूँछत भई सो मैं कियो बखान । नहिं गन्धर्व न देव हम मानुष लीजिय मान २८१ नागपुत्र इमि कहत भे सुनौ कथा पितु एह । देखत कन्या हृष्टमन सखी बदन अतिनेह २८२ लज्जाबश बोलत नहीं देखि कुण्डला तौन । कहे ऋतध्वजसे बचन सुरभी भाषेजौन २८३ सुमुखी सुभ्रूचन्द्रते अधिक क्रांतिहै जासु । हनो बाण तुम असुरतन करौ करग्रहतासु २८४ मैंपरवान सुराज सुत कहत भयो इमिबैन । चिन्त कुण्डला तुम्बुरुहि त्वत्कुलगुरु गुणऐन २८५ चौ० । प्राप्तभयो तुम्बुर तहँ आई । लिये समित्कुश आनँद पाई ॥ पावक बारि हवनसो कीन्हा । कन्यादान ब्याह बिधि दीन्हा २८६ पुनि सोजात भयो तपहेता । कह कुण्डला सनेह समेता ॥ मैं कृतार्थ सखि भई बिशेखी । नृप सुत सहित तुमहिं अवरेखी २८७ हेसखि अब तमहित मैं जैहौं । तीर्थ तोय तनपापनशैहौं ॥ जातसमय बोली मृदुबानी । राजसुवनसो आनँद मानी २८८ नहिं उपदेश योगहैं आपू । बुद्धिमान अतिप्रकट प्रतापू ॥ तद्यपि अरि सूदन कछु भाषिय । भार्य्या भरिय रचि गृहराखिय २८९ सिद्धि धर्मकामार्थहु हेता । भार्य्यासदासहायक देता ॥ तिय पति प्रीति होइ अति अङ्गा । तब धर्म्मार्थ काम कर सङ्गा २९० होइ धर्म भार्य्या बिन कैसे । पतिबिन अर्थ काम नहिंतैसे ॥ पतिबिन तियात्रिवर्ग किमि साधा । पूजन अतिथ मतिय बिन बाधा २९१ लावै अर्थ पुरुष गृहजोई । भार्य्याबिना नाश सोहोई ॥ बिन दोनों त्रिवर्ग सिधि नाहीं । तातेमैं बरणों तुमपाहीं २९२ धन सुख पुत्रबढ़ौयासंगा । यहकहि परिष्वज्य सखि अंगा ॥ करि परनामदिव्यगति धाई । सूनहु पिता

अब कथा सुहाई २६३ तामारूप्य तुरङ्गमऊपर। चाहो चलन ऋ-
तध्वज भूपर॥ दैत्यन जानितिही चणपाये। सदल पतालके-
तुसहधाये २९४ तिष्ठातिष्ठलै तिय कहँ जाता। यह कहि करतभये
शर घाता॥ गदा शूल शर परिघ अपारा। मारत भये एकहीवा-
रा २९५ देखि ऋतध्वज अस्त्र अपारा। निज शरजाल काटि म-
हि डारा॥ अस्त्र शस्त्र संछन्न अपारा। चणमहँ पूरितभयो पता-
रा २९६ हँसि हँसि बाण तजत रणधीरा। कटि कटि गिरत सु-
कोटिनबीरा॥ त्वाष्ट्र अस्त्र पुनि लैबलधामा। बधतभयो दान-
वसंग्रामा २९७ ज्वालमाल अति बाण कराला। दैत्य अस्थि
पूरेपाताला॥ सतिय ऋतध्वज अश्वसवारा। सह पातालकेतु
बधिडारा२९८मारगतिही भूमिपुनिआये। गेपितुपुर तिययुतश्र-
वि छाये॥ शीश पिता चरणन में नायो। बहुरिसकल वृत्तान्तसु-
नायो २९९ लखीकुण्डलाजाइपताला। पाई मदालसा सुखशा
ला॥ जाविधिभयो असुरसंग्रामा। मारोदैत्यन को बलधामा ३००
जाविधि घूमि बहुरि घरआये। बरणि पितासों सकल सुनाये॥
सुनत पिता अति आनँद पायो। बारबार सुत कंठलगायो ३०१
कीन्ह बड़ाई बिबिध प्रकारा। भुवन प्रवेश कराव भुआरा॥ रेमे
सह भार्य्या पितुपुरमें। बनोद्यान सानुषु गिरिवरमें ३०२ बोले
नाग सुवन मृदुबैना। सुनहुकथा पितु आनँद ऐना॥ याविधि
बहुत दिवस चलि गयऊ। कहत नृपति सुत सनपुनि भयऊ
३०३ रचा बिप्रनके हित जैये। अश्वारूढ़ जगत यशपैये॥
शतसो दानवपापंनधारी। तिनकरि बिप्रनहोइँ दुखारी ३०४
सुनत ऋतध्वज आनँद पायो। पूरण पुहुमी जाइ भँभायो॥
मुनिन काहँ दीन्हो सुखभारी। कोटिन पापी असुर संहारी
३०५ परिक्रम्य पुहुमी घरआये। पिता चरण में शीशनवा-
ये॥ याविधि नृपति सुवन सुखभारी। रेमे सहमदालसा
नारी ३०६ एकदिवस यमुना तट गयऊ। आश्रम एक
बिलोकत भयऊ॥ रह पातालकेतुकरभाई। तालकेतु जिहि

नाम कहाई ३०७ मायावी दानव मुनि रूपा । बोलत भयो देखिसुत भूपा ॥ राजपुत्र तुमसों कछु कहिये । इच्छाहोइ करिय मुद लहिये ३०८ बरुण यज्ञ चाहत मनकीजै । ताहित आभूषण निज दीजै ॥ जल में जाइ यज्ञ हमकरिये । रक्षाइत तबलगि चित धरिये ३०६ ग्रीवाभूषण दैपरनामा । करिबोलत भे बचन ललामा ॥ जाहुयज्ञ चितदै तुम करिये । तबलगि हम रक्षा चित धरिये ३१० जबलगि तुमऐहौ इतनाहीं । तबलागि कतहूँ ना हम जाहीं ॥ सो सुनतै मन आनँद लीन्हा । सुमिरण पूर्व बैरको कीन्हा ३११ इन देखत जलगयो समाई । मदालसा ढिगगो सो धाई ॥ तिनसों बचन कहत इमि भयऊ । कुबलया श्व मम आश्रम गयऊ ३१२ आश्रम निकट असुर बरजोरा । आयो भयो युद्ध अतिघोरा ॥ मायावी त्रिशूल उरमारा । मरत भयो तहँ भूपकुमारा ३१३ ब्याकुल होत भयो अतिजबहीं । दियो मोहिं आभूषण तबहीं ॥ दाहशूद्र तापसतहँ कीन्हो । दुखित अश्व अति दानव लीन्हो ३१४ यह मैं निज नेत्रन सों देखा । कृत्य होइ सो करिय बिशेखा ॥ निश्चयार्थ आभूषण लीजै । हमलै कहा सुवर्णहि कीजै ३१५ नामसुवन बोले सुख पाई । सुनहु पिता यह कथा सुहाई ॥ कण्ठाभूषण धरिभूपाहीं । जात भयो निज आश्रम काहीं ३१६ मूर्च्छितलोग गिरे भूमाहीं । तन धन भूलि गेह सुधिनाहीं ॥ राजा रानि बिकल अतिभयऊ । शोक समुद्र नगर भरि गयऊ ३१७ मदालसा पति माला देखी । निहत पतिहि पुनि सुनोबिशेखी ॥ दीन्हों त्यागि तुरत निज प्राना । शोक ब्याप्र नृप भवन समाना ३१८ जाबिधि शोक भूपगृह छावा । ताही बिधि घरघर अधिकावा ॥ राजा सुनत भये दुख पागे । बिन पति मदालसा तनुत्यागे ३१६ शोकाकुल जन सकल निहारा । भूपति बचनकहे तिहिबारा ॥ नहिंरोवहु सुनिये मम बैना । शोचनीय सुत तियसुत हैना ३२० मम सेवक मम आज्ञाकारी । अतितत्पर बिप्रन रखवारी ॥ पा-

यो मृत्यु पुत्र निष्पापा । सोलायक नहिं करन बिलापा ३२१
अवशि देह दिन एक नशाई। मुनिहित तजी शोचनहिंभाई॥
पतिव्रता सत्कुल जनुयाको । पतिहित मरी शोच नहिंताको
३२२ होती पति बियोगिनी जोई। हम सबसो शोच्यारहसोई॥
पतिबध सुनत तजी निजदेहा। ताते शोचन योगन एहा ३२३
कुबलयाश्व माता बध सुनिकै । तादृक बचन कहे मन गु-
निकै॥ पिता सुनिय कह नाग कुमारा । पितुसंस्कार पुत्र निज
कारा ३२४ बाहर मज्जिरानि अरुराई। दीन्ह उदक निज पुत्र-
हि जाई॥ तालकेतु उत गयो बहोरी। निकसो यमुना बारि हि-
लोरी ३२५ मधुर बचन नृप सुतसों कहेऊ। जाहुपुत्र पूरण
मखभयऊ॥ बरुण यज्ञ मम बांछित जोई। सोमैं कीन्ह हर्ष उर
होई ३२६ अश्वारूढ़ सुनत सो भयऊ। गरुड़ बेग पितुपुर चलि
दयऊ॥ आयो तुरत बेग अति भारी। पितुपद लखन मदाल-
सनारी ३२७ चित्तोद्विग्न नगर जन देखे। तिनहिं प्रहृष्टबदन
पुनि लेखे॥ दिब्यादिष्टप कहन सो लागे। मिलत परस्पर अ-
ति अनुरागे ३२८ चिरंजीव कल्याण सदाई। आनँद पितहि
देहु अब जाई॥ सुनत बचन इमि पुरजनकेरे। पहुँचे जाइ पि-
ताके नेरे ३२९ करिप्रणाम पूछो पितु पाहीं। सकल लोग बि-
स्मित दिखराहीं॥ कारण कौन कहिय समुझाई। कहो नृपति
सुनि सकल बुझाई ३३० मरण इष्टहिय भार्य्यासुनिकै। लज्जा
शोक सहित मनगुनिकै॥ मेरी प्रिया मरण ममजाना। तजे
प्राण धिकमोहिं समाना ३३१ मैं अति निठुर नृशंसाश्रेष्ठा। बिन
जीवौं मृगलोचनि इष्ठा॥ मत्कृत निधनप्राप्त ममबाला। मैंजीवत
निर्घृण याहाला ३३२ पुनि तजि शोकबिचारत सोई। ताहिततजैं
प्राण हम जोई॥ ह्वैहैकौनतासु उपकारा। श्लाघितनार्य्याह्वायपु-
कारा ३३३ हाप्रियेति कहिरोवहुँ जोई। निन्दाकरैं पुरुष सबकोई॥
शोकदीन जड़होवों जोई। तबहूं तिरस्कारममहोई ३३४ पितुसेवा
आशिातन कीरबे। जीवत पितु काविधिपरिहरिबे॥ अबकरणी-

य मोहिंहै एहा। त्यागौं योषित भोग सनेहा ३३५ ताउपकार तुल्य यह हैना। निष्ठुर उपकारहि सममैना॥ यामदर्थ त्यागे निज प्राना। ताके अर्थ अल्प यहजाना ३३६ बोले पुत्र अश्व-तरनागा। यविधिकरि निश्चय बड़भागा॥ उदक दान आदिक करि सोई। बोलत भये ऋतध्वज जोई ३३७ मदालसायदि तनु तजि दीन्हा। यह संकल्प तदा हम कीन्हा॥ नान्यास्मिन्जन्म निसहचारिणि। ता बिनहोवै अपर बिहारिणि ३३८ धर्म्मचारिणी पत्नी त्यागी। गजगामिनि पिकबैनि सभागी॥ काञ्ची आङ्गी करिहौं नारी। सत्यबचन निज हिये सँभारी ३३९ बोले नागपुत्र पितु पाहीं। ताबिन तजे भोग सबकाहीं॥ क्रीड़ा क-रत बयस्यन संगा। बरणो हमसो सकल प्रसंगा ३४० यहकारज ताको है जोई। करै कौन ईश्वरबिन सोई॥ या बिधिसुनि पुत्रन मुख बानी। नागराजबोल्यो सुखमानी ३४१ दो०। करैकर्म आरंभनर निजपौरुष अनुसार। हान्याहानि सुशक्यहूनाहिंअ-शक्यबिचार ३४२ ताते करिहै यत्नहम सुनहु पुत्रमम बैन। तप-चर्य्या मनलाइकै यह असाध्यकछुहैन ३४३ या बिधि कहि ना गेन्द्र पुनि तीरथ हिमवंत जाइ। दुश्चरतपतेपेंतहाँ बाणी पदमन लाइ ३४४ तन्मन नियताहार पुनि करत्रिबार अस्नान। नाग अश्वतरकरतभो हंसयानिगुणगान ३४५ छन्दरासगीतिका। देवि आराधनकरत हमजगद्धात्रिसुखेन। बारबारप्रणामशिर सोस्तो-त्र पाठमुखेन॥ यथाअंतर दारुपावक प्रकटनाहिं लखात। तथा सतअरुअसतजगयहआपुहीके गात ३४६ हौत्वमक्षरपरसरस्वति सब प्रतिष्ठितयंत्र। परम अक्षर देविथित परमाणुवत हूतत्र॥ त्वमोंकार स्वरूपसंयुत तीनिबर्ण सुजौन। लोंकतीनहुँबेदतीनिहुँ पावकत्रयतौन ३४७ तीनिबियातीनियोतिष तीनिबर्णहुधर्म्म। तीनियमगुणकाल आश्रम अवस्था त्रयपर्म॥ शब्द अहनिशि पितरतारागणग्रहादि अनूप। इन्द्रवरुणकुबेर रविशशिअनिलहैं तवरूप ३४८ येऽर्थनित्यबिनाशहूजे स्थूलसूक्ष्महुजौन। भूमि

दूजेअन्तरिक्षहुप्राप्तितुमसो तौन ॥ जोअमूर्तहु मूर्तिमानहु ए-
कहू बहुजोइ। दिव्यहूभुवि अन्यथलहू प्राप्त तुमसों सोइ ३४९
दो०। बचनगिरा बचशारदा हंसजानिजै देवि।इलाब्रह्मरानी
सुखदबरदब्राह्मिसुरसेवि ३५० वाक्यभारतीसरस्वतीगीर्वाणीजय
हेत। जलजमाल शोभितगले भालबिन्दु छबिदेत ३५१ कमल
नयन राकेशमुख कनक देह छबिऐन। बीणापुस्तकधारिणी
जियालाल सुखदैन ३५२ अगम अपार समुद्रजग पूरण नौका
जौन। अभिलाषा पूरण करिय मोउरमें है तौन ३५३ या बिधि
अस्तुति सुनतही सरस्वती तिहिकाल। प्रगटि अश्वतरनागसों
बोली बचनरसाल ३५४ चौ०। चाहौबर उरगाधिप जोई। मां-
गौदेव आजु हमसोई ॥ कह्यो अश्वतरगी सुनिलेहू। कम्बल
भ्रातासहबर देहू ३५५ स्वरसम्बन्ध सकल ममदीजै। एती कृपा
इलाअब कीजै ॥ सरस्वती कह दीन्हो सोई। ग्रामराग सप्तस्वर
जोई ३५६ गीतक सप्त मूर्च्छना साता। दिय उञ्चास ताल
पुनि ताता ॥ ग्रामत्रयदीन्हो सुखदाई। कम्बल सहगाता युग
भाई ३५७ ताल तीनि चहुपद लयतीनी। तोद्यचतुर्विधयतित्र
यदीनी ॥ याकेपरे अपर है जोई। मत्प्रसादजानहु तुम सोई
३५८ सबके प्रणेतार द्वौहवै हौ। भूपाताल स्वर्ग यश छैहौ ॥
या बिधि बरदै पुनि सुखदानी। अंतरधान भईतहँ बानी ३५९
दोऊनाग भये उठिठाढ़े। तालस्वर आनँद उरबाढे॥ गे कैलास
शिखरसुखपागे। तन्त्रीलय सहगावन लागे ३६० अनङ्गाङ्गह-
रहरअवराधन। यत्न समेत करत भे साधन ॥ प्रात निशा म-
ध्याह्नहुमाहीं। संध्यनमहँ पुनि गान कराहीं ३६१ दो०। स्तू
यमान बहुकाल में आनन्दित वृषकेतु। बोलतभे बरमांगहू जो
चाहौ निज हेतु ३६२ करिप्रणाम सुनि अश्वतर कम्बल सहि-
त सुखेन। कहत भये शितिकंठसन जो चाहत बरलेन ३६३
जो प्रसन्न त्र्यम्बक अहो दवदेव त्रिपुरारि। अभिलाषितबर
दीजिये कुबलयाश्व की नारि ३६४ चौ०। मरीमदालस जाकर

नामा । तैसियहोइ शीलगुणधामा ॥ सोइ अवस्थामें तनुधारी ।
होवैकन्या आइ हमारी ३६५ कह शिव सुनु पवनाशन बानी ।
तेही भांति होइ सुखदानी ॥ मत्प्रसाद कछु नहिं सन्देहा ।
सुनहु परन्तु बचनममएहा ३६६ जौने दिवस श्राद्धतुम करिऔ ।
मध्यम पिण्ड भक्तिमुदभरिऔ ॥ यहीकामना करिमन ध्याना ।
तर्पण पितृ करिय सुखदाना ३६७ प्रगट होइहै सो कल्याणी ।
मध्यम फण प्रसाद ममबाणी ॥ शिवबाणी सुनि दोनों भाई ।
गे पाताल लोक सुखपाई ३६८ करत श्राद्ध उरगाधिप भयऊ ।
मध्यप पिण्ड अशन पुनि कयऊ ॥ सोई कामध्यान मन लय-
ऊ । पुनि निश्वसत मध्यफणभयऊ ३६९ तासों प्रकट भई सुकु-
मारी । मदालसाअतिसुन्दरनारी ॥ काहूसों नाहीं तिनभाखा ।
मन्दिर गुप्त तियन करिराखा ३७० नागपुत्र दोऊ नितआवैं ।
नृपसुतसाथ क्रीड़िघरजावैं ॥ एकदिवसबोले अहिराई । निजपु-
त्रन सों आँनद पाई ३७१ तुम सों कहा पूर्व हम जोई । अब
कारज कीजिय किन सोई ॥ युवयोरुपकारी नृप वारा । ला-
इय किन अवहित उपकारा ३७२ दो० । कुवलयाश्व कँह ला-
इये मम समीप सुत जाइ । सुनत हर्षयुत नाग सुत गे नृप भु-
वनसिधाइ ३७३ चौ० । कछुक कथा कहि तहँ अति हितसों । निज
गृह चलन कहो नृप सुत सों ॥ सुनत ऋतध्वज कहसमुझाई ।
यह घर तुम्हरेहीहै भाई ३७४ धन बाहन वस्त्रादिक जोई । मम
तुम्हार यह भेद न होई ॥ हम कहँ दीन्ह चहौ तुम्ह जोई । इतहीं
सो लैदीजिय सोई ३७५ मद्गृह जो न अपन करि मानत ।
मत्प्रिय अपर अनुग्रह ठानत ॥ तौ ममत्व मम गृह धनकरि-
ये । तव मम मम निज धन चित धरिये ३७६ तुम दोऊ मम
प्राण समाना । भिन्न अर्थ जनि करिय बखाना ॥ सुनि सनेह
युत नागकुमारा । कहत सत्य जो आपु उचारा ३७७ अस्मन्म-
नसि सदाहै एहा । मम तवएक न कछु सन्देहा ॥ पितु समीप
रावर यश गायो । सुनत पिता अति आनँदपायो ३७८ मोस-

न कहो मोहिं दिखराऊ। कुवलयाश्व कहँ बेगि लयाऊ॥ उठेऋतध्वज आयसु मानी। किय प्रणाम भुवि पितु सम जानी ३७९ धन्य धन्य मो समको आही। पितु तुम्हार जो देखन चाही॥ चलहु अवश्य चलब तिन पाहीं। क्षण आज्ञा टारब हम नाहीं ३८० यह कहि नागसुतन सह गयऊ। गोमति कूल पहूँचत भयऊ॥ तीनों गे प्रवेश करि तहँवाँ। शुभ पाताल लोक है जहँवाँ ३८१ नागकुमार अनूपम देखा। फण मणि सहित प्रकाश बिशेखा॥ बिहँसि प्रेमयुत कह नृप जाता। हौ भल विप्र सुवन सुखदाता ३८२ कहो।पिता सन नाग कुमारा। आये भूपति सुवन उदारा॥ नृप सुत लखो अश्वतर काहीं। माननीय जो देवन माहीं ३८३ उरग कुमार बृद्ध बहु देखे। तिन तनया क्रीड़ा युत लेखे॥ कुण्डल हार बिबिध तन सोहत। जनु सह तार गगन मन मोहत ३८४ कतहुँ गान बीणा कहुँ बाजें। बेणु मृदङ्ग पणव धुनि साजें॥ मणिमय मन्दिर मध्य बिशेखा। नाग अश्वतर कहँ तिन देखा ३८५ दिव्याम्बर माला मणि कुण्डल। भूषण मुक्तमाल छबि मण्डल॥ कांचन आसन शोभित सोई। कह अहिसुत मम पितु यहहोई ३८६ कुवलयाश्व बाणी यह सुनिकै। नायो चरणशीश धनि गुनिकै॥ सो बल करि लिय इनहिं उठाई। मस्तक सूंघि हिये निज लाई ३८७ वत्स धन्य चरितारथ तेरे। बरणौं गुण परोक्ष सुत मेरे॥ सुख सों पुत्र इहाँ तुम रहिये। जिहि प्रकार आनँद मन लहिये ३८८ श्लाघ्यगुणीकरजीवनजानिय। जीवत मरोअगुण जिय मानी॥ गुणि कर जीवन बांधव चाहत। दयावान सबकहँ निरबाहत ३८९पुनिनिजपुत्रन आयसु दीन्हा। सेवा कुवलयाश्व की कीन्हा॥ मज्जनादि तत्क्षण करवाई। मधुपानादि दिये हरषाई ३९० भोगाहार यथेप्सित दीन्हें। तहाँ वास कछु दिन तिन कीन्हें॥ कृताहार नृप सुवन निहारी। नागराज बोले तिहिवारी ३९१ यह मन्दिरहै पुत्रतुम्हारा। शंकाकछुन करियइहि

बारा ॥ रजतसुवर्णांशुकवाहासन । माँगौजो दुर्लभ जानहुमन ॥
३९२ कहो ऋतध्वज आपुप्रसादा । सुवर्णादि ममगृहमें जादा ॥
जीवत पितु कछुहमहिं न चाहा । तिमिपाताल आपु अहिना-
हा ३९३ जासुपिता जगजीवत होई । स्वर्गी पुण्यवान नरसोई ॥
पितृबाहु तरु संश्रितछाया । दिनप्रति सुखीरहत मम काया ३९४
धन रत्नादिक जासुप्रसादा । अर्थिनदेत सहित अहलादा ॥ सो
समस्त इत प्रापत भयऊ । तवयुगांघ्रि मस्तक ममनयऊ ३९५
दो०। कुबलयाश्वके बचन सुनि कहे नागपति बैन। और चहो
सोमाँगिये यदिन चहत गथलैन ३९६ सो०। कहो ऋतध्वज
बैन त्वत्प्रसाद भगवतसकल । ममगृहाल्पकछुहैन यदिअवश्य
दीनोचहिय ३९७ चौ० ॥ तौममपुण्य कर्म संस्कारा । उरसों
होइ न कबहूँन्यारा ॥ मणिरत्नांशुक बाहनजेते । पुरठ गृहासन
नारिसमेते ३९८ अन्नपान अनुलेपन माला । कामगीत बाद्यादि
रसाला ॥ पुत्रधनादि अपर सुखजोई । पुण्य वनस्पतिके फल
सोई ३९९ चाहिय करन सदाना काहीं । पुण्यताहि कछु दुर्लभ
नाहीं ॥ एव भविष्यतीति कहि नागा । बोले बहुरि सहित अनु-
रागा ४०० मांगहु ममगृहआये जोई । जो दुष्प्रापलोक नर
होई ॥ ऐसे बचन सुनतअहिकेरे । नागकुमार और तबहेरे ४०१
सो करजोरि पितासन बोले । राजपुत्र मनकीगति खोले ॥ इनकी
दार मरण इन सुनिकै । दीन्हे प्राणत्यागि दुख गुनिकै ४०२ दा-
नव बैरि आइघरकोई । मिथ्या कहतभयो शठसोई ॥ सोगन्धर्व-
राजकी कन्या । नाम मदालसाति छबिधन्या ४०३ प्रियपत्नीकर
मरण बिलोका । करीप्रतिज्ञा इन युतशोका ॥ बिनामदाल साति
प्रियजोई । मम भार्य्या नान्याअबहोई ४०४ देखन चहत ऋत-
ध्वज सोई । कीजिय पिता किये जोहोई ॥ सुनत अश्वतरकहो
बखानी । मायाबिना प्रगट किमिआनी ४०५ दो०। करिप्रणाम
भुजगेश को कहो ऋतध्वजबैन । लज्जा प्रेमसमेत पुनि किये
अधोमुख नैन ४०६ मायामयीहु या समय मदालसा पितुजोइ।

यदिदर्शय ऐ मोहिंपर गुनो अनुग्रहसोइ ४०७चौ०। कहो अश्व-
तरसुनियेएहा । मायालखन चहत युतनेहा॥तातेतुमहिं लखावों
सोई । गुरुसमान अभ्यागतहोई ४०८ लायेकहि मदालसाता-
हीं । कहकछु नृपसुत मोहन काहीं ॥ देखिय राजसुवन युतने-
हा । है मदालसाकीनहिं एहा ४०९ लखि निर्लज्ज ऋतध्वज
धाये । प्रिया प्रियाकहि सन्मुखआये ॥ देखत नागराज कह
बैना । माया छुवन योगयह हैना ४१० मैंतुमसों प्रथमहिकह सोई।
अन्तर्द्धान छुवत यहहोई ॥ सुनि भूमुर्च्छि ऋतध्वज आये ।
हाप्रियेति कहि बचन सुनाये ४११ नागनरेश देखितहँजाई ।
कहो ऋतध्वजको समुझाई ॥ मृतसंजीवन कथा सुनाई ।
सुनत प्रहृष्ट उठोनरराई ४१२ कान्तापाइ भयो सुख जोई ।
ताको बरणिसकै किमिकोई ॥ कीन्हप्रणामनागपति काहीं ।
चढ़िहय सतियगयो पितुपाहीं ४१३ तिनसों जाइकहो यह
हाला । आनँद अमित लहो महिपाला ॥ मदालसा चरणन
शिरनायो । श्वश्रू श्वशुरमहासुखपायो ४१४ स्वजन समाज
मिली पुनि सोई । पूजन यथान्याय किय जोई ॥ पुरमहँ
भये महोत्सव नाना । जियालाल किमि करै बखाना ४१५
पाइ ऋतध्वज निजबर नारी । रमेमहा मोद उरधारी ॥ निर्झर
शैल नदी बहुकानन। रम्यभूमि निरखत बिधुआनन ४१६ भूप
शत्रुजित बहुदिनएहा । पालीभूमि तजी पुनि देहा ॥ नाम
ऋतध्वज जो सुतराई । कीन्ह तिलक पुरबासिनआई ४१७
भये ऋतध्वज जबमहिपाला। पुत्रसमान प्रजानितपाला॥ तिन
के प्रथम पुत्रजब भयऊ। बिक्रान्ताभिधकहन सुलयऊ ४१८
मदालसा सुनि नाम जहासा । पुनिताके कियज्ञान प्रकासा॥
सुतो त्तानशायी कहँ देखी । कहतभई इमि बचन बिशेखी ४१९
छन्द रामगीतिका। शुद्ध है रेतातनूतवनाम है रत्रनैव। देह पंचा-
त्मकमिदं तव अस्यतूहै नैव॥ रुदतहै किहिहेत तूनहिं भूपसूनुक-
दापि। बिबिध गुणतें प्रगट कीन्हे अगुण रहत तथापि ॥ ४२०॥

भूत भूतनसों जुदुर्बल वृद्धि जातसदाइ। अन्नजल दानादि नहिं
तवबृद्धिहानिकदाइ ॥ कंचुकेतन शीर्य्यमाणे मूढ़तामागच्छ।
कर्म शुभ अरु अशुभ सञ्चित मिलत तनुमलि स्वच्छ ४२१
तात किञ्चितनयअम्बादयित कबहुँ ममेति। भूतसङ्घ सुमान्य है
तू कथनजोहैनेति॥ दुःखको दुखनाशके हितभोगसुखकोजान।
सोइ सुखदुखहोइ प्रगट गुणतनहिंअज्ञान ४२२ दो०। हास्यनारि
लखि नैनयुग अत्युज्ज्वल सुखदान। पीनकुचादिक पिशिततन
तारतिनरककिआन ४२३ यानभूमि गतयानतनु अन्यपुरुष
बसदेह। करत ममत्वन देहवत महामूढ़है एह ४२४ चौ०। या
विधि बर्द्धमान सुतकाहीं। दिय उपदेश विविध विधि ताहीं॥
जन्म प्रभृति बोधित सुखपागो। निर्म्ममगार्हस्थ्यमति त्यागो
४२५ दूसर पुत्रभयो पुनितासू। नामसुवाहुधरो पितुजासू॥
मदालसापुनि कीन्हो हासा। ताहूकें किय ज्ञान प्रकासा ४२६
पुत्रतृतीय भयो पुनि जबहीं। भुप शत्रु मर्द्दन कह तबहीं॥
हँसी मदालसाति सो सुनिकै। दीन्हों ज्ञान पूर्ववत पुनिकै४२७
पुत्र चतुर्थहोत जब भयऊ। नाम बिचार करन नृप लयऊ॥
किंचिद्धास मदालस देखी। बोलतभे भूपाल बिशेखी ४२८
जबहम नाम सुतनको धारा। तुमकिय हास्यं देखि तिहिबारा॥
अरि मर्दन बिक्रान्त सुबाहू। शोभन नाम कहे सउछाहू ४२९
क्षत्रिन योग्य कहे हम सोई। कहिय हास्य कारण जोहोई॥
असतहोइँ जो एते नामा। याकर नाम कहौ तुमभामा ४३०
सुनत मदालसाति हर्षानी। भूपति सों बोली इमि बानी॥
आज्ञा जौन आपुकी होई। करिबे हमहिं शीश धरि सोई ४३१
नाम अलर्क होइ याकेरा। जगमें प्रगटिहि सुयश घनेरा॥ हँसि
कै भूपकहो तिहिबारा। अर्थनामको कौन बिचारा ४३२ म-
हाराज सुनिये कहसोई। हैं बिनअर्थ कहे तुम जोई॥ क्रान्ति
नाम गतिकेर कहावे। देशान्तर महँ जोफिरि आवै ४३३ दो०।
देहेश्वर सर्वगसदा करै कबहूँनहिं गौन। नामंअसत विक्रान्तयह

ताते धारोजौन ४३४ कहो सुबाहुजुनाम तिहिसोऊ नाथनिरर्थ।
जबअमूर्त्त पूरुषअहै ताहिसुबाहुकि मर्थ ४३५ चौ०। नाम तृतिय
अरिमर्दनजोई। सोभूपालअर्थ बिनहोई॥ पूरुषएकबसतसबदेहा।
राजन् शत्रु मित्रको एहा ४३६ प्राणिनसों प्राणी नशिजावै। है
अमूर्त्त सो कहानशावै॥ पृथकभाव क्रोधादिक सोई। ताते
नाम अर्थ बिनजोई ४३७ असतनाम जोहित व्यवहारा। किमि
अलर्क बिन अर्थ विचारा॥ याविधि सुनि महिषी सुखदानी।
तथेत्याह भूपति सुखदानी ४३८ ताहू को सिख देबे लागी।
पूर्व सुतनवत सो बड़भागी॥ यह लखि कहे नृपति युत धर्म्मा।
मूढ़ काहकरत यह कर्म्मा ४३९ पूरबपुत्र जौन बिधि भयऊ।
ताहीभाँति करन पुनि लयऊ॥ मतिप्रयकारजको जो कीजै।
तौ प्रवृत्ति मारग इहि दीजै ४४० है प्रवृत्ति मारग नहिंजहँवाँ।
देवपितृ कारज नहिं तहँहाँ॥ क्षत्रयोनि के कारज जेते। तत्स-
म्यक प्रतिपादयएते ४४१ मदालसा सुनि पतिबचजोई। कहो-
ल्लाप वादिदि सुत सोई॥ सुतबर्द्धस्वभर्त्तुमम मनको। आनन्दय
विभुकरि कर्म्मन को ४४२ मित्रन को कीजिय उपकारा।
दुर्हृदनाश करिय असिधारा॥ धन्यपुत्र बसुधा अरिहीना।
पालयतासि चिरैकंप्रवीना ४४३ तत्पालनते लह सुख भोगा।
पुनि अमरत्वधर्म के योगा॥ तृप्त प्रथम बिप्रनको करियो।
तर्पण बन्धु बहुरिमन धरियो ४४४ परब्रह्म चिन्तन चित कीजौ।
चित्तपरस्त्री में मतिदीजौ॥ यज्ञन सों देवन मुद भरियो। रण
महँ शत्रुनको बंध करियो ४४५ बान्धव आनन्दयव्ययबारा।
गुरु आज्ञा पालहू कुमारा॥ भूषित युवादार सुख दीजै। वृद्धो
बासखास बनकीजै ४४६ राज्य करत मित्रन सुख दीजै। रक्षा
साधुसदा सुत कीजै॥ गो ब्राह्मण के कारज लागी। दीजिय
तात देह यह त्यागी ४४७ इमिललिपूर्ण ज्ञानसम अर्का। प्रापित
बयकौमारअलर्का॥ कियउपनयन ऋतध्वजताको। आइप्र-
णामकियो माताको ४४८ दो०। मयाअत्र कर्त्तव्य यत ततक-

हिये मोपाहिं। प्रश्रयअवनतजानिकै जासों सुख सरसाहिं ४४६
मदालसा कहसुनिय सुत राज्यतिलक को पाइ। रञ्जै प्रजास-
मेतनय पूर्णस्वधर्म बढ़ाइ ४५० चौ०। मंत्रिनके गुण दोषनजा-
नै। चरसो चर अरु शत्रु बिधानै॥ मित्र बंधु बिश्वासनदेई। अरि
बिश्वास कार्य्यहितलेई ४५१ प्रागात्मा मंत्रिण नृपजीतै। ततो
भृत्य पौरन युतनीतै॥ पुनिबिरोध शत्रुनसों करई। सो राजा
अतिआनँद भरई ४५२ ताते कामादिक सुतजेई। प्रथमहिंजीति
नृपतिसोलेई॥ कामादिक करिजित नृपजोई। ताकरनाश अव-
शि सुतहोई ४५३ कामक्रोध मदलोभहु जेते। मानहर्ष बैरीनृप
तेते॥ कामासक्तपाण्डुबध भयऊ। क्रोधादनुह्रादसुतहयऊ ४५४
लोभति ऐल नृपति बधपावा। मदसों बेनहि द्विजन नशावा॥
अनायुषा पुत्रहियुत माना। हर्षात्पुरंजयं बलिजाना ४५५ या
बिधिजीति पुत्र सुखपावै। भूलेभूपति अवशिनशावै॥ शक्रअर्क
यम सोमसमीरा। पाँचरूपधारै नृपधीरा ४५६ दो०। उत्पथगामी
धर्मगत मूढ़मनुजहैं जौन। धर्म्ममार्ग नृपलावई जातस्वर्गहै
तौन ४५७ वर्णधर्म आश्रमतथा सीदतजासुनराजि। बत्सधन्य
सो भूपहै जातस्वर्ग सुखसाजि ४५८ यां बिधिकछु बर्णनकिये
धर्म नृपनके पर्म। सुनिअलर्क पूछतभये बर्णाश्रमके धर्म ४५९
मदालसा कह हर्षयुत सुनिये पुत्रप्रबीन। यज्ञाध्ययनहु दानहू
बिप्रकर्म्म हैं तीन ४६० याजन अध्यापन सहित शुद्ध प्रतिग्रह
जौन। तीनि जीविकाहेतहैं मैं बरणीसुत तौन ४६१ दानाध्ययनहु
यज्ञहू क्षत्री के अपि तीन। भूरक्षा कर धर्म्म युत शस्त्र जीवि-
का कीन ४६२ यज्ञाध्ययनहु दानहू बैश्यस्यापि त्रिधैव। प-
शु पालन बाणिज्य कृषि हैं जीविका सदैव ४६३ दान यज्ञ
सह शूद्र कर सेवा अपर द्विजाति। कारु कर्म्म है जीविका अं-
त्रिज धर्म्म लखाति ४६४ बर्ण धर्म सेवन किये पावत सिधि
सब काल। नर प्रतिषिद्धनिषेवनै प्रेत्य नरक गत हाल ४६५ नहिं
व्रतबंध द्विजन्म कर होवै यावत्काल। काम चेष्टोक्ति भक्ष्यहू

है सुत तावत्काल ४६६ कृतोपनयनसु ब्रह्मचर होंइ बसैं गुरु गेह। तासु धर्म वर्णन करहुँ सुनहु पुत्र युत नेह ४६७ स्वाध्याय सेवा अनल भिक्षाटन अस्नान। गहै भैक्ष्य गुरु देइ लै असन करायसु मान ४६८ गुरु सेवा करप्रीति युत पढ़ै सुते नाहूत। गुरु सों बांछित बेद पढ़ि देइ दक्षिणा पूत ४६९ चौ०। चहै गृहस्थी जो कर सोई। अथवा बानप्रस्थ मग जोई॥ अथवा गहि चतुर्थ सो लेई। जो गार्हस्थ्य माहँ मन देई ४७० उद्वहेद्भार्य्या सुकुमारी। कुल सम सह लक्षण शुभ नारी॥ देव पितृ अरु अतिथि समेता। कर पोषण प्रीणन सह हेता ४७१ भृत्यात्मज दीनान्धहु जेते। पशुवयांसि सह अंधस देते॥ धर्म गृहस्थ राह ऋतु गमना। पञ्च यज्ञ सह शक्तिन समना ४७२ धर्म गृहस्थ भाँति है एहा। सुनु सुत बानप्रस्थ युत नेहा॥ शय्या भूमि ब्रह्मचर्य रहई। पितृ सुरा तिथि पूजन गहई ४७३ त्रिषवण मज्जन होम समेता। बल्कल जटा योग मन नेता॥ वन्य बस्तु कर भोजन करिये। वानप्रस्थइविधि मन धरिये ४७४ चौथो आश्रम यां विधि सोई। तजि सब संग ब्रह्मचर होई॥ इन्द्रीजित चिरवासन एका। अनारम्भ एकासन टेका ४७५ आत्मज्ञानेच्छात्मा देखै। आश्रम इमि चतुर्थ श्रुति लेखै॥ सत्याहिंस शौच अनसूया। क्षमानृशंस्या कार्पणि हूया ४७६ अष्टम सन्तोषहू बखानिय। वर्णधर्म संक्षेपति जानिय॥ चलैस्वधर्मसोइ सुख पावै। मारग तजे दण्ड दुखपावै ४७७ कहअलर्कमा सो गुण खानी। गृही धर्म पुनि कहौ बखानी॥ जो कीन्हे बिन बन्धन होवै। जो करिउच्छ्रितगति लह सोवै ४७८ जो उपकार नरन हित होई। मोसों बरणि कहौ मासोई॥ याविधि सुनि अलर्क मुखबानी। बोली मदालसा गुण खानी ४७९ पितरदेव मुनि मनुज समेते। भूत कीट कृमि पशुखग तेते॥ असुर पतङ्ग रहत सुख देखे। हमको कछु यह देइ बिशेखे ४८० ताते है पवित्र करिमज्जन। तर्पण देव पितृ ऋषिसज्जन॥ करिकै पूज

नेहयुत देवा। पुष्प सुगन्ध अर्पिकर सेवा ४८१ अग्नि हवन करिपुनि बलि देवै। गृहमधि बिश्वदेव अजसेवै ॥ धन्वन्तरि बलिदे ईशाने। पूरुबशक्र याम्ययम जाने ४८२ दो०। पश्चिम वरुणहिदेइ बलि सोमायोत्तरदेइ। धात्रविधात्रहि द्वारगृह बहिर्य्यम्णहि सेइ ४८३ नक्तंचर भूतन हितै देवै बलि आकाश। दक्षिण मुख पितृन यजन करि आचमन प्रकाश ४८४ चौ०। एवं गृह देवन बलि करिकै। गृहपति शुचि होवै मुदभरिकै ॥ श्वपचश्वपाक प्रादिकन काहीं। याबिधि बलि दीजै भूमाहीं ४८५ बहुरि अतिथि पूजन को कीजै। अन्नवारि आदरयुत दीजै ॥ जो अज्ञात नाम कुल होई। श्रान्त बुभुक्षुअकिंचन सोई ४८६ कहत अतिथि बुध ब्राह्मण काहीं। पूछिय गोत्र धर्म तिहि नाहीं ॥ यथा शक्ति पूजन मनलावै। पूजेबिना महा अघ पावै ४८७ श्राद्ध नित्य गृहपालक करई। भोजन बिप्रदेइ मुदभरई ॥ ज्ञाति बंधु पुनि भोजन दीजै। क्षुधित वृद्ध बालक लखिलीजै ४८८ याचकान भिक्षानित दीजै। सबन पूजि भोजन पुनि कीजै ॥ गाथाश्राद्ध अत्रि जो गाई। सोईमैं बरणौं सुख पाई ४८९ नित्य अपर नैमित्तिक दूजी। बहुरि नित्य नैमित्तिक तीजी ॥ पञ्चयज्ञ जो प्रथम बखाना। सो सुत नित्यश्राद्ध सुखदाना ४९० पुत्र जन्म कर्म्मादिक जोई। नैमित्तिक जानिय सुत सोई ॥ पर्व श्राद्धआदिक सुखदाना। सोइ नित्य नैमित्तिक जाना ४९१ नैमित्तिक नांदीमुख कीजै। पिण्डा यवदधि मिश्रितलीजै ॥ एकोद्दिष्टमृताहिजानिय। पुनिपूर्णाब्द सपिण्डी मानिय ४९२ तिर्यग्योनि पुरुषहित जाना। विविधतश्राद्ध करै यजमाना ॥ जाजावस्तु तृप्तते होई। कहौं बखानि सुनियसुत सोई ४९३ भोजनान्न पुहुमी जो परई। क्षालतवृस्त्र अंबुकण झरई ॥ तृप्तिपिशाच देहगत करई। वृक्ष योनिगत नर मुद भरई ४९४ गात्र अम्बुकणिकाभूजावैं। जेसुर योनिलहे सुखपावैं॥ ये बालक अदग्ध कुलमाहीं। क्रिया अयोग्या संस्कृत आहीं ४९५

बिकिर अन्न सोते मुदभरई। संमार्जन जल भोजन करई ॥ भो-
जन करि आचमन जुकरई। अपर अंघ्रि सेचन भूपरई ४६६
ब्राह्मण योन्यादिकगत जोई । पावैं तृप्ति श्राद्धवत सोई ॥
अन्यायोपार्जित धनजोई। तासों श्राद्धकरै नरकोई ४९७ यो-
निपुष्कशादिक चाण्डाला । प्रापितहोयँ तृप्त तिहिकाला ॥
शाकहु श्राद्धकरै युत श्रद्धा। कुलकश्चित्सीदति नहिं अद्धा४९८
प्रतिपच्छ्राद्ध किये धनहोई। द्विपद प्रदाद्वितीया सोई॥बरअर्थिनी
तृतीयाजानौ। नाशक शत्रुचतुर्थी मानौ ४९९ श्रियप्राप्नोति पं-
चमीकाहीं। षष्ठीनर पूजित जगमाहीं ॥ गणाधिपत्य सप्तमीपावै।
उत्तमवृद्धि अष्टमी लावै ५०० नवमी श्राद्धकिये लहनारी। दशमी
पूर्णकामना कारी॥ एकादशी श्राद्धमनलावै। वेदाभ्याससकल
सोपावै५०१द्वादशि श्राद्धकिये जयपावै।मेधाप्रजा पशूवृद्धिजा-
वै॥तेरसि श्राद्धकरै जो कोई। दीर्घायु ऐश्वर्य्यहु होई ५०२ युवा
पितृ आयुध तनंत्यागा। श्राद्धचतुर्दशि कर बड़भागा॥ श्राद्ध
अमावसको करजोई। स्वर्ग कामना लह सबसोई ५०३ स्वर्ग
कृत्तिकाकरि नरपावै। रोहिणि पुत्र कामनां गावै॥ओजमृगाशि-
रामेंलहसोई। आर्द्राशौर्य्य श्राद्धकरि होई ५०४ चेत्रादिकन
पुनर्वसु लहई । पुष्ये पुष्टि श्राद्ध करिअहई ॥ अश्लेषा सुन्दर
सुतदाई। मघा स्वजनकर वृद्धि सदाई ५०५ पुनिसौभाग्य फा-
ल्गुणीदेवै। श्राद्धोत्तराशीलनर लेवै ॥ हस्ते श्राद्ध श्रेष्ठता होई ।
चित्रारूप युक्त नर सोई ५०६ पुनि बाणिज्य लाभदा स्वाती।
कामद पुत्र बिशाख लखाती ॥ चक्रवर्ति कारक अनुराधा। ज्ये-
ष्ठा आधिपत्य देश्राधा ५०७ मूलेरोग्य लहै नरसोई। पूर्वाषाढ़
सुयशयुत होई ॥ ऋक्षोत्तरा शोकहर जानौ । श्रवणे शुभलो-
कनमनआनौं ५०८ लहै धनिष्ठामें धनभारी। बेदबित्व अभि-
जितसुखकारी ॥ भिषक् सिद्धिबारुणे सुहाई। प्रौष्टपदे जाविक
सुखदाई ५०९ बिन्ददुगावतथोत्तर माहीं। रेवतीषु लह कुप्यसदा-
हीं ॥ अश्विनीषुलंह अश्वसुहाये।भरणीष्वायुलहैमुदपाये ५१०

काम्य श्राद्ध या बिधिते करिये । पाइय तौन जौन मन ध-
रिये ॥ सुनि अलर्क बोले सुखपाई । सदाचार कहिये अबमाई
५११ ताबिन इतउत है सुखनाहीं। दुराचारि हीनायु सदाहीं ॥
सुनि मदालसा कह हर्षाई । सदाचार सुनिये मनलाई ५१२ यत्न
त्रिवर्ग सधनहितकरई । तासिधि इत उतहू मुदभरई ॥ चारि
भाग निज अर्थ कि करिये । हिंतपारत्र्यभाग इक धरिये
५१३ आत्म भरण द्वैभागन लीजै। मूलभूत बर्द्धन इककीजै ॥
अर्थ सुफलता हो या भांती। करै बहोरि धर्म सुखपांती ५१४
ब्रह्म मुहूरत जागै सोई । कर आचमन पूर्व मुख होई ॥ संध्या
पूर्वतारसहकरई । पश्चिम सूर्य देखि मुदभरई ५१५ करै उपा-
सन न्याय समेता। तजै अंनापदि नहिं सुत बेता ॥ असतानृत
पारुष्यन बोलै । असच्छास्त्रमहँ बुद्धि न डोलै ५१६ सायं प्रात
होमनित कीजै । उदय अस्तरविदृष्टि न दीजै ॥ केश साधना
दर्शजुदेखै। दंतधावपूर्वाह्णविशेखै ५१७ तर्पणहूपूर्वाह्णेजानौ।
स्नानिय पुत्र कलु और बखानौ ॥ ग्रामावसथ तीर्थ मग खेता।
गो बृजनो विरमूत्र करेता ५१८ नग्न परस्त्रीको नहिं देखै।
नहिं आत्मानहु शकृत बिशेखै ॥ रजस्वलानहि छुवनकह वानी।
नहिं देखै श्रुति कहत बखानी ५१९ सूत्र पुरीषनाप्सुकर सोई ।
मैथुनादि बर्जित तहँ होई ॥ पितृदेवनर पूजन करिकै। कर आ-
हार गृही मुदभरिकै ५२० पूर्वोदङ्मुख भोजनकीजै। अन्तर्जा-
नु राखिकर लीजै ॥ पुनि पवित्र वाग्यतसोहोवै । नहिं प्रत्यक्ष
लवण को खोवै ५२१ नहिं अत्युष्ण अशनको कीजै। किंचिद्भ-
क्ष्याचमन करीजै॥ खड़े चलत विरमूत्र न करिये । बचनोच्छिष्ट
कदानोचरिये ५२२ स्वाध्याय वर्ज्जित पुनि तैसे । छुवै न गो
विप्रानल ऐसे ॥ मस्तक निज नोच्छिष्ट छुईजै । रविशशितार
दृष्टि नहिं दीजै ५२३ भिन्नासन शय्यास्तज भाजन। गुर्वासन
दैकर अभिवादन ॥ सुरार्धनैकांशुक तज भोजन। नाष्णायी-
तनग्न हंकैजन ५२४ मेहत विप्रानलना बाहिय । द्वौपाणिन

शिरनहिं खजुआइय ॥ नचाभीच्णशिरसो अस्नाना। स्वाध्या-
यानध्यायन ठाना ५२५ अहोत्सर्ग उत्तर निशि दचे। सुत्तन-
ग्न नहिं नरग्रहपक्षे॥ गुरुसों कहन कबहुँ कटुवादै। क्रुद्ध जा-
निकै ताहि प्रसादै ५२६ औरनसों न सुनै अपबादा। विप्रन
पथदे नृपदायादा ॥ मत्तोन्मत्त बधिर सहभारा। मूक अन्ध
विद्या अधिकारा ५२७ गुर्विणि अपरयवीयसजोई। पुंश्चलि
सहकृत बैरहुसोई ॥ बालक पतित देव अस्थाना। भूरुह चैत्य
चतुष्पथ नाना ५२८ बुध गुरुदेव आदि गृहिदेखी। करै प्रदक्षि-
ण हर्षि विशेखी ॥ बस्त्रोपानन्माल्य समेता। धृतमन्यैर्नधार
चितचेता ५२९ अलङ्कार उपवीतहु जोई। धृतमन्यैर्नधार नर
सोई॥ पूर्णपर्वयस्वेन्दू बिचारी। तैलाभ्यङ्गनभोगैनारी ५३०
मूर्खोन्मत्तदुखी न्यूनाङ्गा। मायी अरु बिरूप अधिकाङ्गा ॥ इन
हिंदेखि उपहासन कीजै। शिष्यपुत्र बिनदण्डन दीजै ५३१
बैठिय आसन पादनटारी। कृशरमांस संयावविचारी॥ ये
अपने हितकबहुँ न कीजै। भोजन अतिथि सदासुतदीजै ५३२
दन्तधाव पूर्वोत्तरकीजै। बचनोच्चारण तहँ न करीजै॥नोद-
क्प्रत्यक्शिर करि सोवै। दिक्यमेन्द्र शिर करि सुख होवै
५३३ अन्तर्जल मन्दिर बल्मीका। शौच शेष थल मूष मृती-
का॥ वर्जित पञ्च मृदा शुचि हेता। इन तजि अन्य मृदा को
लेता ५३४ स्वप्नाध्ययनासनहु समेता। सन्ध्यन माहँ करैनहिं
एता॥ मैथुन प्रस्थान हू न कीजै। उदकी चारि निशा तजि
दीजै ५३५ पञ्चमिहू सुत हित तज सोई। सम निशि पुत्र
विषम तिय होई॥ निज मंगल बपु सदा बनावै। धवलाम्बर
सित पुष्प सुहावै ५३६ मूलांगुष्ठ रेख सविपाणी। ब्राह्मतीर्थ
अचमन हित प्राणी॥ तर्ज्जन्यंगुष्ठहु मधि जोई। तीरथ पितृ
कहावत सोई ५३७ तामधि पितृनको जलदीजै। वर्ज्जितनां-
दीमुख में कीजै॥ अंगुल्यग्रे तीरथ देवा। तहां सुरन की क-
रिये सेवा ५३८ तीर्थ प्रजापति मूल कनिष्ठा। पूजन तिनकी

तहां वरिष्ठा ॥ कर युगपञ्जलं अग्नि न लीजै। गुरु देवान्प्र-
तिपादन कीजै ५३९ बसिय तहां न चारिन जहँयदी। भिष-
गृण प्रदश्रोत्रिय नदी ॥ बसै धर्मधारक नृप जहँवां। राज्य कु-
भूप सुखकिलह तहँवां ५४० वर्ज्यावर्ज्य इविधि सुख छाये।
जियालाल संक्षेप गनाये ॥ पाइ ज्ञानमा मोसमअर्का। प्रापित
यौवन भये अलर्का ५४१ कीन्ह विवाह ऋतध्वज राजा। ति-
नके भये पुत्र सुख साजा ॥ पितु सेवा आज्ञा प्रतिपालत। भू-
लेहू अधर्म्म नहिं चालत ५४२ या विधि अमित काल चलि
गयऊ। सुत कहँ राज्य ऋतध्वज दयऊ ॥ भार्य्या सह तप हेत
सिधारे। मदालसा सुत बचन उचारे ५४३ बन्धुबियोगज दुःख
प्रकाशै। बाधा अरि अथवा धन नाशै ॥ देत अंगुलीयंक तुम
काहीं। सूक्ष्माक्षर बँचियो तब ताहीं ५४४ यह कहि रत्न मुद्रिका
दीन्हों। आशिष दीन्ह गमन पुनि कीन्हों ॥ सोप्यलर्क अति
न्याय समेता। सुतवत प्रजापाल अति हेता ५४५ दुष्टन दण्ड
शिष्ट परिपाला। कीन्ही यज्ञ अमित महिपाला ॥ एवं बहुत
काल चलि गयऊ। मानहुँ एक दिवस नहिंभयऊ ५४६ या बि-
धि भूलि विषय में गयऊ। नहिं बैराग प्रगट उर भयऊ ॥ तिन
भ्राता सुबाहु सुनि एहा। जो बनबास करत तजि गेहा ५४७
तासु बोध हित कीन्ह बिचारा। शत्रु द्वार करि तौन निहारा ॥
तव सुबाहुलै काशि नरेशहि। करीचढ़ाई सदलस्वदेशहि ५४८
दूत पठायो काशि नरेशा। देहु सुबाहु काहँ अबद्देशा ॥ सुनत
अलर्क दूत मुख बानी। तासों याबिधि कहो बखानी ५४९
ममअग्रज मो ढिग चलिआवै। करि सौहार्द कहै तब पावै ॥
भय करिकै यह राज्य न देहौं। क्षत्री कुल में अयश न लेहौं
५५० मांगो नहिं सुबाहु तापाहीं। क्षत्रीधर्म होत इमि
नाहीं ॥ तबहिं सैन्य लै काशि नरेशा। घेरतभये सकल सो
देशा ५५१ दुर्गपाल चाटकी समेता। कीन्हें बश भूपति नय
वेता ॥ साम दाम दण्डहु मन धरिकै। कीन्हे स्ववश भेद

विधि करिकै५५२ रहो अलर्क अल्पदल सोई। कोशक्षय दिन दिन तिन होई॥ अरिसोपुर आवृत पुनिदेखा। मानसउपजो शोक बिशेखा ५५३ सो मुद्रिका समुझि दुख लीन्ही। माता मदालसा जो दीन्ही॥ करि अस्नान पवित्र सुहोई। बांचतभे सूक्ष्माक्षर सोई ५५४ त्यागैसङ्गसकै नहिंत्यागी। तौ सत्सङ्गकरै हितलागी॥ त्यागै सकल कामनासोई। त्यागे त्यागयदा नहिं होई ५५५ कारजकरै मुमुक्षाहेतू। पढ़िबिचार किय नृप कुलके-तू॥ गुनिमुमुक्षु सतसंगतितेरे। निकट जानयह साधूकेरे ५५६ पीड़ित दत्तात्रेय समीपा। जातभयो भूपति कुलदीपा॥ हाथ जोरिकह बचन नृपाला। दुःखनाश ममकरिय कृपाला ५५७ दत्तात्रेय कहा सुनिबानी। कौनदुःख निजकहिय बखानी॥ या बिधि सुनत दत्तमुखबानी। बोले मनबिचारि सुखमानी ५५८ नोर्वीजलख अनिल शिखिदुक्खा। किन्तु चहत शारीरिक सु-क्खा॥ या पञ्चके सुक्ख सुख जेते। यांतिन्यून अतिरिक्तां ते-ते ५५९ दुख सुख एकौ मोमे नाहीं। दुखसुखहैं केवल मनमा-हीं॥ अहंकार मनबुधि हम नाहीं। अन्तष्करणज दुखमनमाहीं ५६० सोपारक्यन् कदालखाती। मैंनिज दुःखगुणौं किहिभाँ-ती॥ अग्रजकरै राज्यकीइक्षा। कामन अत्रभई मनदिक्षा ५६१ नहिं शिरमांस अस्थिकरजाके। किमि नागाश्व रथादिकताके॥ ताते रिन्निमेस्ति सुख दुःखा। पुरबल कोशादिक जेसुःखा ५६२ यथा कमण्डलु घटि घटमाहीं। एकबियत बहुभाँति लखाहीं॥ तथा सुबाहु काशिपति होंहीं। देहभेद शरीर न जोहौं ५६३ यह कहिकरि दत्ताहि प्रणामा। बोलतभे पुनि बचन ललामा॥ तुमहिं देखि सबदुःखपलाने। सुखसमुद्रमहँ आइ भुलाने ५६४ पुरुष जहँ जहँ बुद्धिलगावै। सो सोपाइ महादुखपावै॥ प्रकृति परे हम सुखि दुखिनाहीं। भूत तिरस्कृत गुनि दुखआहीं ५६५ दत्तात्रेय कहो सुनिबानी। सत्यनृपति जोकहाबखानी॥ दुःखमूल ममइतिहै जोई। निर्म्ममेति निर्वृति सुखसोई ५६६ दो०। प्रश्न

हमारीते भयो प्रगट तुम्हारेज्ञान। ममइति प्रत्यय जिहिनशे शा-
ल्मलि तूलसमान ५६७ अहमित्यङ्कुर होतभो स्कन्धममेति ब-
खान। शाखा क्षेत्रगृहादिकहु पत्रनारिसुत जान ५६८ चौ०।
महापत्र धन धान्यसुहाये। पुण्यापुण्य पुष्पछबिछाये॥ सुख
दुख फलतहँ परतलखाई। बाढ़ो वृक्षकाल बहुपाई ५६९ संसारा
ध्वथके नरजोई। छाया चहत तासुकी सोई॥ भूलिज्ञान सुख
कारणधावैं। सोनर आत्यंतिक किमिपावैं ५७० जेसत्सङ्गकुठार
बनावैं। ममता वृक्षकाटि सुखपावैं॥ प्राप्य ब्रह्म बनशीतलका-
हीं। परे बुद्धि निर्वृतिलहताहीं ५७१ दत्तात्रेय बचन इमिसुनि-
कै। कहोअलर्क भूपमन गुनिकै॥ भगवंस्त्वत्प्रसादको पाई।
प्रगटो ज्ञानहिये ममआई ५७२ परथिरचित्त बिषयसो नाहीं।
छूटै किमि बंधन ममम्हाहीं॥ काबिधि जगत जन्मनहिं होई।
निर्गुणता आवै किमिसोई ५७३ ब्रह्मैकत्त्व होइ किहिभाँती।
कहिय योग मोसन सुखपाँती॥ याचतप्रणत मोहिंगुनिस्वामी।
सम्यग्ब्रूहि ज्ञाननिधि× आमी ५७४ याबिधि सुनि अलर्क के
बैना। बोले दत्तज्ञान सुखऐना॥ राजन सुनहु योगहम कहि-
ये। शाश्वत ब्रह्म जाहिसो लहिये ५७५ दो०। आत्मासो
आत्मा प्रथम जीतै नृपति सचेत। तिहि जीतंनहिन कहतहौं
यत्नसुनहु अतिहेत ५७६ प्राणायामैंदोंषदह किल्बिष धारण
जान। बिषयन प्रत्याहार करि गुणं* नीश करि ध्यान ५७७
धाम्यत दाहत दोष जिमि पर्वत धातु न जान। दोष तथेन्द्रिय
नशत हैं प्राणाया मतिमान ५७८ प्रथमहिं साधन को करै
प्राणायाम सुबोध। प्राणायामकहावई प्राणापान निरोध ५७९
लघुमध्युत्तम जानिये प्राणायाम त्रिधैव। तिहि प्रमाण बर्णन
करौं सुनु अलर्क विधि सैव ५८० लघु मात्रा द्वादश कहत
मध्यम चौबिस जान। छत्तिस उत्तम मानिये प्राणायाम प्र-
मान ५८१ निमेषोन्मेषण कहत मात्राकी परमान। संख्या प्रा-

× आमीमोसोबंगालभाषा *अनीशमाया॥

णायाम हित द्वादश मात्रिक जान ५८२ प्रथमहिं जीतै स्वेद
को मध्यम वेपथु जौन। जीतिय तृतिय विषाद को क्रमते जा·
निय तौन ५८३ कोमल सेवा के किये हरि कुञ्जर वश होइ।
जैसे तैसे प्राणहू योगिन के बश सोइ ५८४ हस्तिप नागहि
बशकरत तिमियोगी निजप्रान। तस्यावस्था चारिहैं सोऊकरत
बखान ५८५ ध्वस्ति प्राप्ति संवित अपर है प्रसाद सुखदान।
सुनिये ताको रूप अब सोई करत बखान ५८६ कर्म इष्ट जिन
के अहैं तिन फल संक्षय होइ। सोई ध्वस्ति कहावई सुनहु प्राप्ति
जिमि सोइ ५८७ ऐहिक आमुष्मिक सहित कामादिकहैं जौन।
रोंकि सदा योगीरहै प्राप्ति कहावत तौन ५८८ आगत अर्थ
अतीतहू प्रगट गुप्त हैं जोइ। सूर्य सोम गृह गति लहै संवित
सिधि है सोइ ५८९ मन प्रसन्न जासोंरहै पञ्च प्राणयुत जौन।
इन्द्री इन्द्रिन अर्थ सह है प्रसाद सिधि तौन ५९० लच्चण प्रा·
णायाम के सुनहु भूप मनलाइ। योग युक्त होते समय आसन
जो सुखदाइ ५९१ पद्मासन अर्द्धासनहु स्वस्तिकआसनजान।
बैठियोग जोरै तहां प्रणव हिये मधि आन ५९२ सम सम आ·
सन होइकै उभयचरण हर सोइ। लिंग वृषणयुत पार्ष्णिनै दा·
विथाणुवत होइ ५९३ किंचिदुन्नामित शिरै परसै दन्तन दन्त।
नासिकाग्र अवलोकई दिशिन विलोकै सन्त ५९४ रजसों
तम सत सों रजहिं जीति सत्व थिर होइ। इन्द्रिन इन्द्रिय अर्थ
सो प्राणादीन्मनसोइ ५९५ कच्छपाङ्ग इव कामना हरिहर
एक सदैव। आत्मा में आत्मा लखै सो शुचि नैवकदैव ५९६
सकल दोष तिहि नाशई स्वस्थ होत है तौन। परब्रह्म प्राकृ·
त गुणन न्यारे देखत जौन ५९७ श्वास खैंचि अङ्गन प्रथम
हृदि उर लावै फेरि। कण्ठ बक्र नासाग्र पुनि नेत्र भौहँ मधि
हेरि ५९८ पुनि मस्तक में लावई कछु तदुपरि लै जाइ। प्राप्य
दशैता धारणा साम्यत्तर सुख पाइ ५९९ नाध्मात व्याकुल
त्तुधित श्रान्त सुयोगी जौन। योग युक्त होवै कदा योग सिद्धि

हित तौन ६०० शीत उष्ण दुख बायुमें सशब्दाग्नि जलतीर। जीर्ण गोष्ट चौराहमें धेरे ध्यान नहिं धीर ६०१ शुष्क पर्णचय सरि तटै चिता भूमि अहिवास। सभय चैत्य बल्मीक ढिग अपर कूप के पास ६०२ इन अस्थानन के बिषे करै न योगाभ्याश। तहाँ बिघ्न करि होत हैं सो मैं करत प्रकाश ६०३ बाधिरत्व जड़तांधता बुद्धिलोप मूकत्व । ज्वरहू बाधत इन थलन जे ढूंढ़त हैं तत्व ६०४ तिन दोषन के नाश हित कहत उपाय बखानि। योगिन के कर्त्तब्य यह लीजै मानस आनि ६०५ बात गुल्म के नाश हित उदावर्त्त हित सोइ। बात बिकार अपारहित खाइ यवागूसोइ ६०६ शीतौषधकर उष्णरुज़ शीतउष्णकर सोइ। काष्ठ कील शिर ताड़िये लुप्तस्मृति जब होइ ६०७ सत्व अमानुष योगितन करै प्रवेश कदाइ। बायु अग्नि की धारणा दाहै ताहिं तदाइ ६०८ याबिधि रक्षा कीजिये आतम की सब काल। मोक्ष काम धर्मार्थहित यह शरीर महिपाल ६०९ आलोल्या रोग्या निठुर स्वर शुभ कान्ति प्रसाद । सुगन्धाल्प मल मूत्रहू चिह्न योगके आद ६१० शीतोष्णादि भिरुग्रसो विद्यति बाधन यस्य । औरन सों भयभीत नहिं सिद्धि योग की तस्य ६११ योगिन हित उपसर्ग जे प्रगट होतहैं तत्र । तिनको मैं बर्णन करहुँ सुनहु भूपमणि अत्र ६१२ काम्यक्रिया अरुकामना यांचत मनुजन पाहिं । विद्या माया दान फल दारादिवधन काहिं ६१३ देव देह अमरेश तनु यज्ञ रसायन जौन । मरुतउडनजल शिखि बिशन श्राद्धादिक फल तौन ६१४ सुरपूजन ब्रत नियम फल पूर्त्तादिक चह सोइ । योगी चित्तहि जीतई जब या बिधि ते होइ ६१५ उपसर्गन सों छूटई ब्रह्मसङ्गि मन कारि। इन उपसर्गन के तजे आवत अपर प्रचारि ६१६ त्रिगुणमयी सोजानिये प्रातिभ श्रावण दैव। भ्रमावर्त्त योगिन हितै भाषत पांच सदैव ६१७ बिघ्नहेत ये योग के बरणौं तिनके रूप । काव्यशास्त्र वेदार्थहू शिल्पादिकहु अनूप ६१८ प्रगटहोत हियमांझये प्रातिभ

तातेनाम। योजन सहसन की सुनै शब्द गुणे गुण धाम ६१९
श्रावण सोइ कहावई पुनि आठौ सिधि देख। देव दृष्टि उपसर्ग
यह जानिय दैवविशेख ६२० निरालम्ब जिहिदोषकरि भ्रमतसुयो-
गिनचित्त। नाशहोत आचारसब भ्रम उपसर्ग सुमित्त ६२१
जलावर्त्त जिमिकोउपरि व्याकुलहोवै जीव। तमावर्त्त उपसर्ग
गुनि नाशक चित्तातीव ६२२ योग विनाशक येसकल हैं उपस-
र्ग महान। मनमय कम्बल ओढ़ई शुक्लवर्ण मतिमान ६२३
करैचिन्तवन ब्रह्मको प्रणवहिये मधिधार। लघ्वाहार जितेन्द्रिहू
करै योगपरचार ६२४ भूम्यादिकहैं धारणा सूक्ष्मसप्त शिरधार।
धारि धरित्री धारणा पावै सौख्य अपार ६२५ आत्मानं उरवी
लखै बंधन ताकोत्यागि। अप्सु सूक्ष्म रसकोलखै अग्निरूप
सुख पागि ६२६ स्पर्शवायुमें जानिये शब्दाकाशेभ्हीन। सू-
क्ष्मत्यागि थूलनगहै ब्रह्माम्बुधि मनमीन ६२७ होत सूक्ष्म या
भांति मन बुद्धिसूक्ष्म पुनिहोत। सप्त सूक्ष्म याबिधि तजे हो-
वैयोग उदोत ६२८ दृष्ट्वा दृष्ट्वा सूक्ष्मये त्यक्त्वा त्यक्त्वा
सिद्धि। परमगतिहियोगीलहै होइ योगकीबृद्धि ६२९ जहँ
जहँ भूतनके बिषे करत राग महिपाल। तहँतहँ लहि आसक्ति
को नाश होत है हाल ६३० ताते सूक्ष्मन जानिकै सक्त
परस्पर त्याग। देही या बिधि जो करत जात परे बड़भाग ६३१
सप्त धारणा एकही योगी त्यागत जौन। सूक्ष्म भूत लयजात
है तौन तौन में तौन ६३२ अणिमाहू महिमा सहित लाघिमा
गरिमाजौन। प्राप्तिहु प्राकाम्येशित्वं वशित्वहू येतौन ६३३
अष्टसिद्धि येआवहीं जो सूचक निर्बाण। ताते नहिं आवैं बढ़ैं
होय नाशनहिं जाण ६३४ सप्तधारणा जानिकै भोगियुक्त
नहिं होइ। कनकखण्ड द्वै अग्नि दहि हो जिमि एकहि
सोइ ६३५ अग्नि मिलाये अग्नि में यथा एकहीतौन। योगी
या मारगचले होतब्रह्ममय जौन ६३६ जलमेले जल में यथा
जलएकै ह्वैनाहिं॥ योगीयुक्ति बिचारिकै तिमि परमात्मा मा-

हिं ६३७ कह अलर्क भगवन कहिय योगीमारग जौन। चलि सीदति नहिं ब्रह्ममग सुनन चहत हमतौन ६३८ सुनत दत्त नृपसों कहो जो मानहु अपमान। अमृत सम अपमान है बिष सममान बखान ६३९ चक्षुपूत पादन धरै वस्त्रपूत जल पेइ। सत्यपूत बाणी कहै बुद्धिपूत चितदेइ ६४० श्राद्धयज्ञ आतिथ्यमें सुरयात्रोत्सव जोइ। सिद्धि महाजनकै अरथ योगी जाइ न सोइ ६४१ करैं यथा अपमान जन चलिये मारग तौन। सतमारग भूषण करत चरै योगयुत जौन ६४२ भिक्षा लेइ गृहस्थ गृह श्रद्धधान जोहोइ। श्रोत्रिय दान्तहु होइजो अपर महात्मा सोइ ६४३ भैक्ष्य यवागू तक्रहू पावकफल औ मूल। कण प्रियंगु पिण्यांकहू शक्तुव योग्यनुंकूल ६४४ प्रथम कलुक जल पानकरि होवैमौन सचेत। तदुपरि स्वाहा दीजिये पाँचप्राणके हेत ६४५ प्राणापान समानहू है उदान अरु व्यान। इनहित स्वाहा देइकै भोजन शेष बखान ६४६ करै बहुरि आचमनसो धरै पञ्चव्रततौन। ब्रह्मचर्य्य आस्तेय युत त्यागा लोभहुं जौन ६४७ अपर अहिंसा पंचमी बहुरि नियमहैंपाँच। शौचा क्रोधाहारलघु गुरुशुश्रूषा साँच ६४८ स्वाध्याय पंचमअहै याबिधि साधै ज्ञान। जौकारज साधकअहै सारभूत तिहिमान ६४९ इदंज्ञेय यह ज्ञेय है तृषित चरत इमिजौन। कल्प सहस्रहुके बिषे ज्ञेय न पावततौन ६५० त्यक्त सङ्गजितक्रोधहू मूँदिबुद्धिके द्वार। लघ्वाहार जितेन्द्रिहू ध्यानमध्य मनधार ६५१ शून्य स्थल अवकाश में गुहामध्य बन माहिं। नित्ययुक्त योगीरहै धरि उर ध्यान सदाहिं ६५२ बाग्दण्ड मनदण्डहू कर्म्मदण्ड येतीन। निषत दण्ड हैं यस्य ये सत्रिदण्डि प्रवीन ६५३ सदसज्जग सबआत्मसम गुणअवगुणमय यस्य। याबिधि देखत जौन है प्रिय अप्रियको तस्य ६५४ काञ्चन लोष्ठहु ज्यासुसम शुद्धबुद्धि है जौन। सबभूतन में एकमति जात परमपद तौन ६५५ वेदश्रेष्ठ पुनि यज्ञ हैं

यज्ञनसोंजपश्रेष्ठ । ज्ञानजप्यसो ज्ञानसों जानिय ध्यान वरिष्ठ
६५६ अप्रमादि एकाग्रचित रति एकान्तहि होइ । इन्द्रीजित
शुचिसोलहै योगमुक्ति पुनिसोइ ६५७ वर्त्तमान योगीसदा
या प्रकार है जौन । योग व्यवस्थित पूर्णसो मुक्ति लहत
हैतौन ६५८ परमात्मा प्रत्यक्षलखि विश्वरूप विश्वेश । वि-
श्वपाद शिर ग्रीवयुत भावन विश्व सुरेश ६५६ ओमित्येका-
क्षरजपै तासुप्राप्ति के हेत । तासुरूप वर्णन करौं सुनु नृप
बुद्धिनिकेत ६६० आऊ मा ए युक्त हैं त्रयअक्षर सुखदान । स-
तरजतमसों युक्तहैं मात्रा तीनोंजान ६६१ योगिगम्य निर्गुण
अहे ऊर्द्धस्थित मात्रार्द्ध । गान्धारी तिहि नाम है गान्धारस्व-
रसार्द्ध ६६२ ब्रह्मा विष्णु महेशयुत वेदअग्नि त्रैलोक । मात्रा
अर्द्ध समेत पुनि ओंकारमें ओक ६६३ है अकार भूर्लोकजहँ भुव
जानियेउकार । व्यंजन सहितमकारजो स्वर्गलोकसुखसार ६६४
व्यक्तरूप मात्रा प्रथम पुनिअव्यक्त द्वितीय । मात्राअर्द्ध सुपरम
पद हैचिच्छक्तितृतीय ६६५ योगभूमि याविधिलखै सदसज्जानै
सोइ । ओमित्युच्चारणकरै ब्रह्माक्षरहै जोइ ६६६ जो नर सम्यक
जानई बाध्यावैताभांति । सोतजि संसृति चक्रयह तजित्रिबंध
परजाति ६६७ परपरमात्माके विषे लहै ब्रह्मलय सोइ । कर्म
बन्ध अक्षीण गुनि मृत्युरिष्ट गुणजोइ ६६८ दत्तात्रेय महीपसों
कहतभये पुनिबैन । अरिष्टानि भूपति सुनहु गुनहु नीतिके ऐन
६६६ जिनहिं देखि निजजानई मृत्युयोगविदजौन । देवमार्ग
ध्रुवशुक्र विधु छांहअरुंधतितौन ६७० चौ० । जो इनको देखै
नहिं सोई । सम्वतसर जीवन तिहिहोई ॥ रविविधु अग्नि प्रकाश
न देखै । जीवै सो शिवमास विशेखै ६७१ बान्त पुरीषमूत्रहु
सोई । करप्रत्यक्ष स्वप्नमहँ जोई ॥ सोनर जीवैगो दशमासा ।
इमिअलर्क सोदत्त प्रकासा ६७२ प्रेत पिशाच लखै नरजोई ।
पुनि गन्धर्वनगरकहँ सोई । सुवरण बरण वृक्ष पुनिदेखै । सो
जीवै नवमास विशेखै ६७३ दो० । थूल क्रशित सो थूलसो क्रशि-

तएकहीबार। प्रकृति औरही भांतिहो अष्टमास तनुधार ६७४
पांशु अपर कर्दमविषे खण्डपाद जिहिहोइ। पाष्र्णगुल्यथवा
जिये सप्तमास नरसोइ ६७५ गृद्ध कपोतहु काकहू पक्षी नीलहु
कोइ। बैठैशिरषटमासतिहि आयुमनुजकीहोइ ६७६ काकपंक्तिजा
को हतैं पांशुवर्षहत जौन। निजछाया लख और विधि चतुःपंच
रहतौन ६७७ बिनामेघ विद्युत लखै दक्षिण आश प्रकास।
इन्द्रधनुष निशिमेंलखै जीवैद्वैत्रैमास ६७८ घृत तैलादर्शहु विषे
पुष्करहूमेंजौन। निजशिरवा नूतनलखै जीवमासभरतौन ६७९
गंधयस्यतनवस्तसम शवसम अथवाहोइ। जीवनताको जानिये
अर्द्धमासहैसोइ ६८० सूखैजाके न्हातही हृदय पादहूजान। गल
सूखै जलपीवतहि दशादिन रहतनप्रान ६८१ मारुतहोवै भिन्न
जिहि क्रन्दति मर्मस्थान। हर्षैजल छूयेनहीं तासुमृत्यु मनआन
६८२ गानकरत दक्षिणदिशा चढ़िकै बानरभालु। स्वप्नमध्य
इमि जाइजो होवै ताको कालु ६८३ रक्त नीलपट धारिणी
गाती हँसती नारि। लैजावै दक्षिणदिशा स्वप्नेमृत्यु निहारि
६८४ पूरुष विकट करालअति नीलात्मायुधधारि। उपलघात
स्वप्नेकरै लीजिये मृत्यु बिचारि ६८५ भोजनकरतेही क्षुधा
लागै हियमें यस्य। दन्तघर्षहू होइपुनि मृत्युजानियेतस्य ६८६
दीपगंध जानैनहीं त्रास लहै अहरात। निजशरीर परनेत्रमें ल-
खै न मृत्युलखात ६८७ शक्रायुध निशि अर्द्धमें ग्रहगण दिनमें
देख। बक्रनासिका होइजिहि ताकी मृत्युविशेख ६८८ गर्धवोष्ट्र
युतयानचढ़ि स्वप्नेदक्षिणजाइ। सद्यमृत्युतिहिजानिये सुनुभूपति
मनलाइ ६८९ कर्णभ्कांपि शिरशब्दको सुनै नहीं नरजौन।
चक्षुज्योतिहोवै मलिन सद्य मृत्युबश तौन ६९० तेजसि प्रविशै
स्वप्नमें बहुरि न निकसै सोइ। याहीविधि जलकेविषे शीघ्रमृत्यु
बशहोइ ६९१ याविधि काल बिचारिकै दृष्ट्वारिष्टकराल। त्यागि
मरणभय योगिजन धारैयोगनृपाल ६९२ जाक्षणलखै अरिष्टये
ताक्षण जोरैयोग। योगयुक्त तबलगिरहै यावत्काल सुभोग ६९३

कालभोग दिन जीतिकै याबिधि जीतैकाल। सुखपूर्वक
विचरै बहुरि योगि धारणापाल ६६४ लांघि परम निर्बाण
को बुद्धिगुप्तहै जौन। जासुकथन सामर्थ्यनहिं प्राप्तहोतसुख
तौन ६६५ याविधि सब तोसोंकहो सुनु अलर्कमति ऐन। प्राप्त
ब्रह्म इमिहोतहै यथाअर्थ सुखदैन ६६६ जाकरिजीवै भोज्यसो
बसै जहां गृहतौन। अर्थप्राप्त जिहिसोइ सुख है ममत्वइतकौन
६६७अभ्यर्थितकारजकरै कर्णनसो जिमितत्र। तिमियोगीनिज
बुद्धिसों परगतिसाधैअत्र ६९८ अत्रिपुत्र पद बन्दिकै अलर्क
भूपसचेत। प्रश्रय अवनत बाक्यपुनि कहतभये अतिहेत ६९९
धन्यकाशिपति कटक युत घेरतभो ममदेश। ताभय सों प्रभुपद
लखे दारिसकल कलेश ७०० महद्भाग्यमैं मन्दबल महद्भाग्य
हत पत्र। महाद्भाग्य क्षयकोश भो आयो पुनि मैं अत्र ७०१
महद्भाग्य तव पाद युग ममयति मारगप्राप। महद्भाग्य ममचि-
त्तमें बसो त्वद्रुक्तिप्रताप, ७०२ महद्भाग्य तवसंगते प्रगटो मम
उरज्ञान। महद्भाग्य कियआपु जो मोपर कृपामहान ७०३ होत
शुभोदय पुरुषके अनरथ अर्थहि जात। तवसङ्गमते ब्यसन
यह यथाभयो सुखदात ७०४ भोसुबाहु उपकारि मम औरोका-
शिमहीप। जिन कृत मैं प्रापितभयो तवयोगीश समीप ७०५
सो मैं तवपरसादते जारिपापशिखि ज्ञान। करिहौं सोई यत्नजिमि
होइ दुःख नहिंआन ७०६ अब तजिहौं गार्हस्थ्य मैं दुखतरु
काननजौन। तवआज्ञा शिरधारिकै ज्ञानदानि सुखभौन ७०७
कहोअत्रिसुत गच्छनृपह्वैहै तवकल्याण। निर्म्ममनिरहंकारह्वै
चरविमुक्ति हितमान ७०८ यह सुनिकीन्ह प्रणामपुनि आये
तत्क्षणताहँ। अग्रज अस्य सुबाहुपुनि सहित काशिपतिजाहँ
७०९ हँसिकह चाहतराज्यमम लीजियकाशिनरेश। अथवादेहु
सुबाहुकहँ यह समस्त ममदेश ७१० काशिराज सुनिकहतभे
किमिअलर्क मतिऐन। देतराज्य संयुगबिना भाषतयाबिधि बैन
७११ क्षत्रिनको यह धर्मनहिं क्षत्रधर्म तुमजान। निर्जितमंत्री

गणतबहुँ धारिशिरासनबान ७१२ जीततबैरी सिंहसम पूरतमन के काम। भोगतवसुधामोदयुत करतयज्ञ सुखधाम ७१३ कहअलर्क रहप्रथम मति मेरीहूयाभाँति। कारणयाको सुनियअब जो मम अत्रलखाति ७१४ जाबिधिभौतिकसंघयह अन्तःकरणतथैव। तद्वदशेष सुजन्तुपूर्वर्त्ततगुणहु सदैव ७१५ तच्छक्तिहुयादिएक है अन्यकोउ यदिहैन। तौको नृपअरि मित्रप्रभु भृत्यगुणिय गुणऐन ७१६ सोमैंदुख पायोमहा त्वद्भय उद्भवजौन। दत्तात्रेय प्रसादसों लहोज्ञान मैं तौन ७१७ इन्द्रीवर्गन जीतिकै तजिकै पूरण संग। मनलगाइ परब्रह्ममें तिहिजीते जय अंग ७१८ सो मैंतवअरि भूप नहिं तुममम।रि नहिं मन्य। ममअपकारि सुबाहु नहिं शत्रुलखौ कहुँ अन्य ७१९ सुनि इमि बचनं अलर्क के उठिसुबाहु हर्षाइ। महद्भाग्य इमिभाषिकै भ्रातानन्द्योजाइ७२० शरणगही जिहिहेततव सुनिये काशिनरेश! सुफल सकल कारजभयो जाइय देहुनिदेश ७२१ सुनिसुबाहुके वचनइमि कहे काशिपतिबैन।.काहितआये कालहो कहिय वचन मतिऐन ७२२ पितृपितामह राज्य मम करत अलर्क सुजौन। याहित लाये मोहिं मम जीति दीजिये तौनं ७२३ तब मैं दल लै इत चढ़ो सो लीजिय यह राज। भोग करिय निज कुल उचित सारिय सबबिधि काज ७२४ सुनि सुबाहु इमि कहत भे सुनिये काशिनरेश। जाहित यह उद्यम भयो किय इत आपु प्रवेश ७२५ विषयसक्त अतिहोत भो यह भ्राता मम जौन। एक जननि के जन्म लै लखिय दुखित बिधि कौन ७२६ प्राप्त मोह गार्हस्थ्य में दुखित बिलोको ताहि। तनु सबन्धि बिलोकि कै आये तुम सह चाहि ७२७ दुखसो जानिविरागमै हैहै याके चित्त। सदलआपुको लाइकै साधो कारज मित्त ७२८ सो प्रगटो बैराग्य इहि दुखसो सुनिय अनूप। होइ सकल कल्याणतव जातअहोंमैं भूप ७२९ मंदालसाक गर्भ जनि पीत्वाअस्तनतस्य। नान्यनारि सुतहोतहैं योग-

वर्त्म गत अस्य ७३० कीन्हों कारज सकल मैं तवसंश्रयको पाइ। जातसिद्धिके हेतपुनि सुनिय भूप मनलाइ ७३१ त्वत्सङ्गमते यह किया महत्काय महिपाल। स्वस्तितेस्तुअबजातहौं लहोज्ञान नरपाल ७३२ काशिराज कहकीन्हअति अलर्क को उपकार। ममउपकारन करतकिमि कीन्हींकहा विचार ७३३॥

दो०। फलदायक सत्सङ्गहै अफलहोतसो हैन। ताते कहिय बिचारिकै महाज्ञान गुणऐन ७३४ कह सुबाहु धर्मार्थ जो काम मोच्छ हैं चारि। तीनि ह्रास को जाइहैं मुक्तिहोइ सुखकारि ७३५ कहत सोइ संक्षेप ते सुनहु नृपति मनलाइ। सुनिकै करहु बिचार पुनि यत्न करहु सुखदाइ ७३६ मम इति प्रत्यय नाकरिय अहमिति त्यागिय सोइ। सम्यग्धर्मालोच्य कै रहै निराश्रय होइ ७३७ कस्याहंइति जानिकै आत्मा करि आलोच्य। बाह्यान्तर्गतहू बहुरिहो आलोच्या शोच्य ७३८ अव्यक्तादिबिशेष पर अबिकारी चैतन्य। व्यक्ता व्यक्तहि जानिकै जानत को नहिं अन्य ७३९ इहि जाने विज्ञात सब बरणों तुमसों जोइ। तुमसों पूँछे जात अब ज्ञान हिये तब होइ ७४० काशिराज सो भाषि इमि गे सुबाहु तिहिकाल। पूजि अलर्कहि निजपुरहि गे पुनि काशि नृपाल ७४१ पुत्र ज्येष्ठको राज्यदै गे अलर्क बनकाहँ। सिद्धि हेत सबसङ्गतजि यत्नकृतभे ताहँ ७४२ तदुपरिकाल महानमें ह्वै निर्द्वन्द्वसचेत। पाइ योगकी सिद्धिको लहानिर्वाण समेत ७४३ सब यह जग देखतभये सुरनर असुरहु खर्व। गुणमयपाशनमेंबँधे बध्यमान नित सर्व ७४४ पुत्र भ्रातृपर अपर यह याबिधि भाव बिचारि। आकर्षित करणन सदा दुखित भिन्न दृशिधारि ७४५ अहो कष्टकी बातहै पूर्वराज्य सुखमान। योगपरे सुखहैं नहीं यह पीछे मैंजान ७४६ मदालसाहु सुबाहुकी कथा अलर्कसमेत। जियालाख वर्णनकियोदायक बुद्धिसचेत ७४७॥

चौ०। अबश्रुतदेव बिप्रकीगाथा। बरणौंनाइरामपदमाथा॥ कथा नृपति बहुलांश्वबखानी। याहीमें कहिहौं सुखदानी ७४८

दो०। दोऊ मिथिलापुर बसतदोऊप्रियभगवान। कृष्णभक्ति धारण कियेपूर्णशांतगतमान७४६तिन प्रसन्नताकेहितैरथपरचढ़ि भगवान। ऋषिन संगलै जनकपुर जातभये सुखदान ७५० बामदेव नारद सहित अत्रि कृष्णयुतराम। असित अरुणि शुकदेवहू देवगुरू सुखधाम ७५१ कणवच्यवनमैत्रेययुत मगपूजित मुनिसाथ। भक्तसुखद शुभ जनकपुर पहुँचतभे यदुनाथ ७५२ ते अच्युत आये सुनत परे चरण में धाइ। श्रुतदेवहु बहुलाश्वहूतनकी दशा भुलाइ ७५३ पुरबासी आये सकल जनपद बासि समेत। लैलैभेंटै करनमें सौहँठाढ़ अतिहेत ७५४ हाथजोरि ठाढ़ेभये दोनों बिप्र नरेश। हरि तिनकी गति जानिकै कियघर दुहुँन प्रवेश ७५५ निजगृहं हरिआये निरखि भूपति आनँद पाइ। शुभआसन बैठाइकै धोयेपग सुखदाइ ७५६ चौ०। लोक पवित्र करनं पगवारी। छिरके शिरकुटुम्ब सुदधारी॥ पूजन करत भये तिनकेरी। मालाम्बर सुगंध बहुतेरी ७५७ धूपादिक आरतीलखाये। मधुरअन्नलै अशन कराये॥ पादअङ्कलै दाबन लागे। बोलत भये प्रेमरस पागे ७५८ सब भूतानामात्मा जोई। द्रष्टा साक्षिकहावत सोई॥ सत्यकरन निज बचन सुहाये। अस्मदृग्गोचर प्रभुआये ७५९ जो याबिधिभांषो भगवाना। मम एकांत भक्त जे नाना॥ तिनसम रमा शेष प्रियनाहीं। अज आदिक तिनसम न कदाहीं ७६० दो०। या बिधि चरणांभोज युग को त्यागैमतिमान। शांतजनन निष्किंचनन्न मुनीनांसुखदान ७६१ योवतीर्य यदुबंश में दारुण मनुज कलेश। दुख नाशन त्रैलोकके यश छायो सब देश ७६२ तीक्ष्ण बुद्धि हे कृष्णजी है प्रणामतवहेत। नारायण अति शांतिबपु पुनि सब ऋषिन समेत ७६३ बास करिय ममधाम में कछुक दिवस यदुनाथ। चरण रेणु निज डारिकै निमिकुल करिय सनाथ ७६४ विनय सुनत भूपाल की बासकीन हरितत्र। करत सकल कल्याणभे नर नारिनके यत्र ७६५ एकरूप श्रुतदेवघर जातभ-

ये भगवान। निजगृह आये जानिकै पूजे जनक समान ७६६
सुनिन काहँ पूजनकियो नृत्यकियो सुखपाइ। बिबिधभांति
पुनि पूजियो शुभ आसन बैठाइ ७६७ पुनि सभार्य्य धोये चरण
चरण सलिल सुखसार। निज मस्तक सेचन कियो छिरको
गृह परिवार ७६८ दर्भांबुज तुलसी मृदा सुरभि मधुर जल
जौन। फल उशीर आदिक दिये यथा शक्तिलै तौन ७६९
सत्व विवर्द्धन अन्नलै तदुपरि अशन कराइ। पुष्पमालताम्बू-
लहू देत भये सुखपाइ ७७० कृतातिथ्य बैठेसकल तबश्रुत-
देव द्विजाति। सतिय चरण दाबन लगे बचन कहे या
भांति ७७१ नाथ हमहिं दर्शन भये भयेतु किन्तु तदैव।
यहींदं शक्तिन विरंचि प्रविश ससत्त यदैव ७७२ चौ०। जेतत्र
कथा सुनैं अरु गावैं। पूजन करैं बन्दि सुखपावैं॥ जे या विधि
अमलात्माआहीं। करत प्रकाश तासु उरमाहीं ७७३ तुम हृ-
दिस्थ दूरहु तिन हेता। हैं विक्षिप्त कर्म जिन चेता॥ आत्म
शक्ति अहमादि कहाई। तिनसों हौ अग्राह्य सदाई ७७४ जानै
को तुम्हारि गति स्वामी। नाथ नमामि नमामि नमामी॥ आ-
यसुनाथ हमहिं कछु दीजै। धरि निज शीश तौन हम कीजै
७७५ यद्धवाञ्चखगोचर ऐये। नृणां क्लेश अंत तत्र गैये॥
ताते शिक्षा देहु कृपाला। धारि शीशसुमिरौं सबकाला ७७६
सुनि इमि विप्र बचन सुखदानी। करकरगहि बोले हँसिबानी॥
ब्रह्मन्कृपा करन तव हेता। हम आये सब मुनिन समेता ७७७
पादरेणु सों करत पवित्रा। को जानै इन मुनिन चरित्रा॥ ती-
रथ देव क्षेत्र बहुकाला। सेवा करि फलदेंयेहाला ७७८ दो०।
ब्राह्मणसो मम प्रिय नहीं रूप चतुर्भुज एह। सर्व वेदमय विप्र
हैं सब सुरमय मम देह ७७९ ताते ब्रह्म ऋषीन को पूजिय मम
बपु जानि। इन पूजें पूजित सदा हम होवैं सुखदानि ७८०
इमि प्रभु आयसु पाइकै राजा विप्र समेत। आराधन कीन्हे ब-
हुरि एकभाव युत हेत ७८१ इमि भक्तन गृहबास करि सतमार-

गहिबखानि। द्वारवती कहँजातभे सकलप्रजासुखदानि ७८२ ॥

चौ० । उद्धवजी की कथा सुहावनि । अब बरणौं संतन मनभावनि ॥ कृष्णचन्द्र के अति प्रिय सोई । मंत्री मित्र सगे हित जोई ७८३ खान पान सङ्गहि सँग करहीं । एकहि सङ्ग बैठि मुद भरहीं ॥ यदुबंशीनय निपुण उजागर । ज्ञान मान शोभा के सागर ७८४ वृन्दाबन ते जब हरि आये । कंसमारि निज धाम पठाये ॥ उग्रसेन मथुराके राजा । करत भये श्रीहरि सुख साजा ७८५ पुनि बसुदेव देवकी पाशा । जाइ कीन्हि आनन्द प्रकाशा ॥ मथुरा बास कृष्ण इमि कीन्हा । पुर नर नारिन आनँद दीन्हा ७८६ कीन्हि सुरति गोपिन की जबहीं । आनँद मगन भये हरि तबहीं ॥ उद्धव जी को लीन्ह बुलाई । गोपिन बोधन हेत पठाई ७८७ चढ़ि रथगे उद्धव पुनि तहँवां । गोपी वृन्द बिराजत जहँवां ॥ रथ बिलोकि गोपी उठिधाईं । कृष्ण समान जानि सुख पाईं ७८८ कोऊ कहत आव घनश्यामा । पीताम्बर धर तन सुखधामा ॥ कोऊ कहत श्याम किमि आवैं । कुब्जा के सँग आनँद पावैं ७८९ याविधि रहीं सकल बतराई । तब लगि रथ आयो नियराई ॥ हरि नाहीं यह धौं को हेरी । किमि अक्रूर क्रूरमम बैरी ७९० लैगो प्रीतमश्यामहमारे। अबधौं करिहै आइकहारे ॥ हमहिंमारि किमिमांस न लेहै । कंसहि जाइ पिण्ड उतदेहै ७९१ यमुना तट भूले नँदलाला । वृन्दाबन की कुञ्जरसाला ॥ गोपिनसंगबिबिधसुखकीन्हे । तौनभुलाइसकल हरिदीन्हे ७९२ याविधि सुमिरि सुमिरि गोपीगन । राधा कृष्ण विहारगयो मन ॥ घर बाहर कछु नाहिं सुहाई । भई मत्त गोपी समुदाई ७९३ भजन । श्रीश्यामावर नागर नटरस रूपनयन मनलाइ रहीहैं । भईं युगल रसबश सबगोपी लाजशंक दुरिआइरहीहैं ॥ दुबिधा दूरिभई मतिकाची सत्यप्रेम प्रगटाइ रही हैं । जागीं सब सोवतते मानहुँ प्रातकमल छबिछाइरही हैं ॥ जियालाल प्रभु नटवरनागर कला सकल ब्रजआइरहीहैं ७९४

हरे सबनमन नवलबिहारी ॥ नयन श्रवण रसना अंगनप्रति बासकियो गोबर्द्धनधारी। बैठत उठत चलत सोवत निशि क्षण क्षण नहिं बिसरत बनवारी ॥ गृहजन कहैं करैं कछुऔरै सासु ननँदलखिदें बहुगारी । जियालाल प्रभु युगलरूपरस मगन मत्तनहिं सुनैं गुवारी ७६५ चौ० । उद्धव तिनकी यह गति देखी । बूड़े ब्रह्मानन्द विशेखी ॥ पुनि गोपी रथ ढिग चलि आई । सकुचीं सखाजानि यदुराई ७६६ आसन दीन्हों हरि प्रियजानी । बोलतभई मनोहरबानी ॥ हरि सन्देश कहौ हम पाहीं । जिन समान कोऊ प्रियनाहीं ७६७ अब घनश्याम कहौ कबऐहैं । बदन दिखाइ हमहिं सुखदैहैं ॥ जिन दीन्हे हम को सुखनाना । कहाँ लुभाइरहे भगवाना ७६८ याविधि पूर्ण प्रेम तिनदेखी । उद्धव बोलतभये विशेखी ॥ तुमहित कहो जौन भगवाना । सुनहु तौन हम करत बखाना ७६९ भजन । ऊधौ श्याम सँदेश सुनावैं ॥ कहियो जाइ गोपि ग्वालनसों करि समाधि अन्तर ममध्यावैं । सदा एकरस बसत सर्वघट हौं अनादि निर्गुण गुणिगावैं ॥ आगम निगम पुराणं बखानत बिनाज्ञान को मुक्ति न पावैं । जियालाल प्रभुको सँदेश सुनि गोपीजन उर बिरह बढ़ावैं ८०० उद्धव कठिन सँदेश सुनायो ॥ श्याम विरह तनजरि कोइलाभो तापर सेहकरन तुमआयो । ब्रजकी जीवनमूल साँवरो योगि यत्नकरि ध्यान न पायो ॥ शुकसन-कादि आदि मुनि नारद जिहि रसमें तनदशा भुलायो । जि-यालाल प्रभु सोइ कृपाकरि ब्रज बनबीथिनमाँझ बहायो ८०१ दारन कारण श्याम पठायो ॥ निर्गुण निराकार अव्यय अज व्यापक अगह गह्यवन आयो । आगम निगम जासु यश गावत सोइ श्याम यहभेद बतायो ॥ जो समदृष्टि समान एकरस तौ कत मोहन चित्त चुरायो । जियालाल प्रभु कृष्ण इष्ट जिहि उद्धव तिहि यहमत किमिभायो ८०२ युवतिन हेत योग तुम लाये ॥ क्षण क्षण सुरति करति दृग भरि भरि चहुँदिशि चि

तवति बिरह बढ़ाये । कल नहिं परत पलक नहिं लागत मन चकोर हरि शशि बिनुपाये ॥ अवधि आशकी थाह जीव तन चाहत अगुण अथाह बहाये । हमतनभरो वियोग विरह दुख तुम सँदेश कहि अति अधिकाये ८०३ द्वितिय सखी सुनिकहो बुझाई ॥ सुनुरी सखिदूषण नहिं याको याहि कूबरी दियो पठाई । जैसी कहो कहतयह सोई सुनि सुनि शूल उठत अधिकाई ॥ यहसबहै बिधवनको कर्त्तब युग युग जीवहु कुंवर कन्हाई । जियालालप्रभुइमि कबभाषैं यह सब कुब्जा रचो उपाई ८०४ याबिधि सुनिमहिलन मुखबानी ॥ सकुचि नाइशिररहे मौनह्वै पूरण प्रेम मगन मनजानी। पुनि बिचारकीन्हों मनमेंयह येचरित्रहंरिके सुखखानी ॥ पठयो मोहिं हेत याहीके यहबिचारि गोपिन गुरुमानी । जियालाल प्रभुकी प्रिय गोपी तिनहिं नौमिउद्धव रतिआनी ८०५ चौ० नन्द यशोदहि मिलि सुख पाई। तिनसों लहि सत्कार महाई ॥ पुनि जहँ क्रीड़ा कीन्ह कन्हाई । तहँ तहँ गे उद्धव सुख पाई ८०६ क्रीड़ा थल बिलोकि सुख पावैं । करि दण्डवत मोद उरलावैं ॥ पुनि आनँद उमगो उरभारी । यहअभिलाष हिये निज धारी ८०७ धन्य धन्य गोपी ब्रज माहीं । इन सम कोउ भुवन में नाहीं ॥ जिन हरि सङ्ग महासुख कीन्हे । तनमन जिन अर्पणकरि दीन्हे ८०८ तिन पगरेणु होउँ मैं दासा । होउँ कि बृक्षादिक सुखबासा ॥ निज कुटुम्ब परिवार बिहाई । कृष्ण चरणमन दीन्ह लगाई ८०९ याबिधि कछुक दिवस करि बासा । उद्धव मन आनंन्द प्रकासा ॥ पुनि सब सों तिन आयसुमाँगा । मथुराचलेसहित अनुरागा ८१० चले पठावन गोपीग्वाला । सुरति करावत श्रीनँदलाला ॥ घूमे दूरि पठाइ बहोरी । बारबार करजोरि निहोरी ८११ उद्धव चलि मथुरामें आये । कृष्ण चरण पुनि शीशनवाये ॥ पुनि गोपिन की प्रीति बखानी । प्रेममगन भे शारँगपानी ८१२ इमिबृन्दावन गमन सुहावा । श्रीउद्धवकर बरणि सुनावा ॥ श्री उद्धकर

चरित अपारा । कहौं अपर कछु लघुबिस्तारा ८१३ द्वारावती माहँ इकबारा । सब यदुबंशिनकेर कुमारा ॥ पिण्डारक तीरथ चलिगयऊ । तहँ मुनि बहुत बिलोकत भयऊ ८१४ चहे करन तिनकी उपहासा । यह चरित्र तहँ कीन्ह प्रकासा ॥ साम्बुनाम श्रीकृष्ण कुमारा । गर्भवती युवती तनधारा ८१५ पुनि बालक सब बचन उचारे । मुनि गण सुनिये कहिय बिचारे ॥ काह प्रगट होवे इहि नारी । पूँछि न सकत लाज उर धारी ८१६ ध्यान धारि देखो मुनिएका । हास्य बचननहिं सहित विवेका ॥ क्रोधित बचन कहे मुनि सोई । कुलनाशक मूशल इमिहोई ८१७ सुनि बालक अतिही भय पाये । उग्रसेनि की सभा सुनाये ॥ सुनि सब यदुबंशी भय खाई । साम्बोदर छोरत भे आई ८१८ आयसमुसल तहाँ लखि लीन्हा । रेत द्वार चूर्ण तिहि कीन्हा ॥ ताहि डारि बारिधि महँ दीना । शेषायस लीलो कछु मीना ८१९ धीवर पकरो जाल मँझारा । लोह पाइ नाराच मधारा ॥ शाप जानि या बिधि यदुबंशा । हरषे जन मानस सरहंशा ८२० धाम जान निज कीन्ह बिचारा । होन लाग उतपात अपारा ॥ उद्धव करिबिचार मनमाहीं । हाथ जोरि बोले हरिपाहीं ८२१ सुनिये नाथ बचन ममएहा । अशकुन देखि होत सन्देहा ॥ जानचहत निजलोक कृपाला । मोकहँ जानिपरत यह हाला ८२२ लीजिय साथ मोहिं निज स्वामी । बार अनेक नमामि नमामी ॥ आपु विहीन इहां किमि रहिहौं । महाकलेश दुसहदुख सहिहौं ८२३ दो० । पलकओट बीतत कलप अलप लखत भरि नैन । ताते तुमबिन किमि रहें लहें कौनविधि चैन ८२४ शयनाशन साथहि किये भोगसुयान पयान । सो तुमबिन कैसेरहैं गुनि बुधहोत अयान ८२५ प्रेम शोकमय वचनबहु उद्धवके याभांति । सुनि बोले बिहँसितबदन श्रीहरि कंसाराति ८२६ चौं० । उद्धव कछु शोच मति कीजै । मोहिं समीप सदा लखिलीजै ॥ जैहौं अवशि आपने धामा ।

पूरणभे देवनके कामा ८२७ उतरी सकल भूमि गरुआई। कछु यदुबंश रहो अबआई॥ ताहित भई बिप्रकीशापा। नाशहोइगो आपहि आपा ८२८ भार उतारि अवशि हम जैहैं। पर तुमको इतही तजि दैहैं॥ हैममरूप जु आत्मज्ञाना। ताहि धारि हिय कीजिय ध्याना ८२९ अल्पकाल नतुजाइ नशाई। रहियइतहि निज हिये बसाई॥ उद्धव पूछतभे शिरनाई। दीजिय योगअंग समुझाई ८३० तब हरि सकल योग समुझायो। ज्ञान बिराग समेत बतायो॥ मायाब्रह्म निरूपण गायो। कर्म्मकाण्ड बहु बिधि समुझायो ८३१ भगवत अर्चाबिधि समुझाई। कहो बिभूती सकल गनाई॥ बरणे आश्रम धर्म सुहाये। ऊंचनीचकर्मन गतिगाये८३२ बर्णन कीन्हे तत्त्व बिभागा। उद्धव सुनो सहित अनुरागा॥ हंस प्रसंग कहोपुनि बरणी। भिक्षुकथा मुदमंगल करणी ८३३ दत्तात्रेय चरित्र सुहावा। उद्धवकोश्रीकृष्ण सुनावा॥ पूरणज्ञान भयो उरमाहीं। जानतभे सबजगत वृथाहीं ८३४ उद्धव हरि प्रश्नोत्तर नाना। जियालाल नहिं कीन्ह बखाना॥ बाढ़ै ग्रन्थ होइ बिस्तारा। ताबिधि बरणि लहै किमिपारा ८३५ तब श्रीहरि बोले युत नेहा। उद्धवसुनहु बचन ममएहा॥ दारा पुत्र भवन तजि आसा। जाइ करिय बदरीबन बासा ८३६ नर नारायण जहां बिराजैं। गंग तरंग देखि अघभाजैं॥ सुमिरण तहां हमारो कीजै। मेरोरूप हिये लखि लीजै ८३७ इत याबिधि होवैगो हाला। ममजातहि आवै कलिकाला॥ ज्ञानधर्म सब भांति नशैहैं। पापहिये नरनारि बसैहैं ८३८ ताते तुम अबहीं तजिजैये। सकल भांति उत आनँद पैये॥ हरि आज्ञा निज शीश चढ़ाई। उद्धव चलतभये दुखपाई ८३९ बारबार बहु करत प्रणामा। हरि बियोग दुख तरु उरजामा॥ शोकमग्न मुखआव न बानी। हरितजिगे हरिआयसुमानी८४० तहांजाइ बहुबिधितप कीन्हा। निजउर मध्यदेखिं हरिचीन्हा॥ भूलिगये इन्द्रीगण नाना। प्रासभये निर्बाण स्थाना ८४१ दो०। याबिधि उद्धवकी

कथा सर्वानँदकी खानि । जियालाल वर्णनकियो अतिसंक्षेप बखानि ८४२ ॥

दो०। बालमीकि श्वपचहुकथा याहीनिष्ठामाहँ। परप्रथमहि वरणीकथा रामानँदकीजाहँ ८४३ ॥

चौ०। ज्ञानदेवकीकथा बखानी। कहतसकल आनँदकीदानी॥ जिनके शिष्यभये शुभदोई। नामदेव तीलोचनसोई ८४४ इनकी काव्यमहासुखदाई । तेजवृद्धि मनहरि सिवकाई ॥ ज्ञानदेव गे विप्रनपाहीं । पढ़न विचारिवेद मनमाहीं ८४५ बाहर जाति विप्रगुणि इनहीं। वेद पढ़ावतभे नहिं तिनहीं ॥ ताको कारण है याभाँती। इनके पिता सकल गुणपाँती ८४६ लेतभये संन्यास सुजाई। पीछेगई नारि तिनधाई॥ कीन्ह कलह संन्यासी पाहीं। निजपति घरलाई गहिबाहीं ८४७ नामदेव सुतज्येष्ठ कहाये। ताहित विप्रनवेदपठाये॥ नामदेव हरिभक्त सुहावन। किय विचार तिनमान नशावन ८४८ आज्ञा एक लुलायहि दीन्हा। वेदारंभ पढ़नहित कीन्हा॥ शाखा अमित पढ़ी कछुकाला। सब विप्रन जानो यहहाला ८४९ भगवतभक्तमाहँ बिश्वासा । करतभये तजिकै जगहासा ॥ ज्ञानदेव कीन्हीं अतिदाया। भगवत सेवाहेत सिखाया ८५० ॥

दो०। लड्डू स्वामीकीकथा यहजग मंगलमूल।जियालाल वर्णन करत हारकभवनिधिशूल ८५१ चौ०। भयेपरम भगवत प्रियसोई। लखत चराचर हरि बपुजोई॥ विचरत भये धरणि शुभवेशा। दैवाधीनगये तिहि देशा ८५२ भगवत भक्तिनकोऊजानैं। देवी सेवाको हितमानैं॥ देतनित्य नरको बलिदाना। इनहिं विलोकि हर्ष उरमाना ८५३ देवीसौहँ गये लैतबहीं। चाहतभये देनबालि जबहीं॥ भगवत भक्तकेर यहहाला। देखि नसकी देवि तिहिकाला ८५४ गईमूर्त्ति दुर्गा की फाटी। धारि खड्ग दुष्टन शिर काटी॥ कीन्ह नृत्य दुर्गा तिनआगे। कीन्हीं विनयदेखि सुखपागे ८५५ देवीचरण लागि हितकरिकै।

नानासुख मानसनिज भरिकै ॥ देवीकरि सेवा तिनदेखी। बासीआये शरण विशेखी ८५६ भगवतभक्ति तिनहिंतिनदीन्हा। गमन बहोरितहाँ सो कीन्हा ॥ विचरन नानादेशनलागे। हरि सुखरँगे प्रेमरस पागे ८५७ ॥

दो० अबनारायण दासकी कथाकहौं सुखदानि। जिनको बदरी बननिकट बासलीजियेमानि ८५८ चौ०॥ भगवत भजन निष्ठ गुणखानी। अनुक्षण सुमिरतशारँगपानी ॥ भगवत चरितगुप्त बहुतेरे। भक्तिभाव तिनकहे घनेरे ८५९ भगवतसम भगवत जन चीन्हा। हरि पद धारि पूर्ण चित दीन्हा ॥ दर्शन हित मथुरा चलि आये। केशव देव भुवन सुख पाये ८६० लागे बास करन सो तहवाँ। कीन्ह बिचार एक दिन जहवाँ ॥ की दर्शन हित जो जन आवैं। जूता काढ़ि द्वारपर जावैं ८६१ लागो रहत होइ चित तिन को। तातें हमहिं बचावैं इनको ॥ लगे बचावन यह गुणि सोई। बिन पहिचानि न बरजो कोई ८६२ दुष्ट एक कोऊ दिन एका। मोट धरायो छांड़ि बिबेका ॥ मारग माहँ चलै लै सोई। किय दण्डवत जानि तिन कोई ८६३ सो मूरख देखत पछितायो। हाथ जोरि बहु बिनय सुनायो ॥ तिन तेहि देखि कृपा अति कीन्ही। अनपावनी भक्ति हरि दीन्ही ८६४ तासों कहो करिय जनिशोचा। परकारज बिन यह तनुपोचा ॥ आखिरदेह नष्ट यहहोई। तब कारज आवैनहिं कोई ८६५ या बिधि तासु बोधकरि दीन्हा। बिदाभक्तिपूरण दै कीन्हा ॥ याबिधि हरिजन दयाबड़ाई। वेदपुराण सदायशगाई ८६६ ॥

चौ०। किन्हर दास कथा सुखदाई। मैं बरणों मनआनँद पाई ॥ भजनानन्द सत्य रसपागे। सदारहत हरिपदअनुरागे ८६७ काहूसों दुर्वचन न बोलैं। नितही हरि शरणागत डोलैं ॥ सर्वजीव भगवत बपुजाना। जगत धर्म छांड़े मदमाना ८६८ झूठ सांचतजिसार असारा। भगवत भक्तिहिये निजधारा॥यावि

धि बीति काल कछु गयऊ। जीवन मुक्त प्राप्त पद भयऊ ८६९ ॥
चौ० । पूर्णदास की कथा सुहावनि। अब बरणौं संतन मन भावनि ॥ जिन हिम गिरि समीप सुख पाई । सुमिरों हरिहि समाधि लगाई ८७० ध्यान मध्य मन दीन्ह लगाई। प्राणायाम कीन्ह सुखदाई ॥ प्राण बायु अपने बश कीन्हा। जीवन मरण भीति तजि दीन्हा ८७१ ॥

इतिश्री भगवद्भक्तानुरागदायक जियालाल जन्माग्रेण विरचिते चतुर्विंशतिनिष्ठामध्ये पंचदशज्ञानध्याननिष्ठायांद्वादश भक्तकथावर्णनोनामभक्ताम्बुनिधौसप्तदशस्तरङ्गः १७॥

दो० । षोड़शवींनिष्ठाकहौं बर्णन शांत बिराग। चौदहभक्तन की कथा बरणौं युत अनुराग १ रामचरण अरबिन्द में करिदण्डवत करोरि। नारायण अवतारकोबन्दनकरौं बहोरि२ सो०। लेपुहुमी अवतार बसत बद्रिकाश्रमबिषे। तपके माधिमन धार जगप्रवृत्तिवैराग्यकिय ३ छन्दनरेन्द्र। नारायण अरविन्द स्वच्छपद जन षडंघ्रि सुखकारी। मधुकैटभ नाशन जलसायन माया तिमिरतमारी ॥ नाभितामरस अण्डजउद्भव लहि विलोकि चहुंओरा। चलजल कमल अपर कछुनाहीं लखो तिमिर पुनिघोरा ४ प्रगटे हमयह कमल कहांसों किय बिचार मनमाहीं। तरवर नाल चालपुरुषायुषपारलहो तिननाहीं ॥ आये घूमि कमल कमलासन भ्रम अपार मन भयऊ। कृपा रावरी तप तपेति यह शब्द श्रवण पुनि लयऊ ५ कीन्हो तप अपार तिनपायो बुद्धि पराक्रम भारी। चौदह भुवन रचे क्षणमाहीं अपर जगत बिस्तारी ॥ भये प्रसन्न आपतिन करगहि गे निजलोक सिधाई। जहाँ न जराशोक माया भ्रम जियालाल सुखदाई ६ भजन। केशव शरण गहे सुखपावे। नाना भोगकरै या जगमें अंतकालवैकुण्ठ सिधावै ॥ जासु नाभिसों पंकज जामो प्रगटे ब्रह्मा जगत उपावै। जाको ध्यान धरत योगी नित लै बीणा नारद गुण गावै ॥ शारद शेष महेश जपतजिहि जियालाल चरणन शिरनावै ७